राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय 4

पुराने नियम का कैनन

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
कैनन, एक दर्पण के रूप में 2
आधार 2
पवित्रशास्त्र का चरित्र 2
बाइबल के उदाहरण 3
केंद्र 4
सिद्धांत 5
उदाहरण 5
व्यक्तिगत आवश्यकताएँ 6
कैनन, एक खिड़की के रूप में 7
आधार 7
पवित्रशास्त्र का चरित्र 7
बाइबल के उदाहरण 10
केंद्र 11
समकालिक चित्र 12
ऐतिहासिक खोज 14
कैनन, एक तस्वीर के रूप में 18
आधार 18
पवित्रशास्त्र का चरित्र 19
बाइबल के उदाहरण 21
केंद्र 23
लेखक 23
पाठक 25
अभिलेख 26
उपसंहार 29

राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय चार

पुराने नियम का कैनन

परिचय

हर कोई जिसने लोगों के एक बड़े समूह, जैसे कि किसी कलीसिया या किसी अन्य प्रकार के संगठन की अगुवाई की है, वह जानता है कि समूह के लिए एक व्यापक लक्ष्य रखना और कुछ मूलभूत नीतियाँ स्थापित करना महत्वपूर्ण होता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, तो विशेष अवसरों और चुनौतियों को संबोधित करना भी अक्सर जरूरी हो जाता है।

बाइबल के प्राचीन जगत में, महान राजाओं का लक्ष्य अपने राज्यों को मजबूत करना और उनका विस्तार करना था, और उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय संधियों के द्वारा मूलभूत नीतियों को स्थापित किया। लेकिन इन राजाओं ने विभिन्न राजकीय सूचनाओं के द्वारा अपने राज्यों के सामने आनेवाले विशेष अवसरों और चुनौतियों को भी संबोधित किया, जिनमें से कुछ वास्तव में आज हमारे संग्रहालयों में पाई जाती हैं।

अतः प्राचीन इस्राएलियों के लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि इस्राएल के परमेश्वर, अर्थात् संपूर्ण सृष्टि के राजा ने भी ऐसा ही किया था। उसका लक्ष्य पृथ्वी पर अपने राज्य को मजबूत करना और बढ़ाना था, और उसने वाचाओं के द्वारा अपने राज्य की मूलभूत नीतियों की स्थापना की। लेकिन परमेश्वर ने विभिन्न राजकीय सूचनाओं के द्वारा उन विशेष अवसरों और चुनौतियों को भी संबोधित किया जिनका उनके राज्य ने सामना किया था, और उनमें से कुछ अब हमारे पास पुराने नियम के कैनन में हैं।

यह हमारी श्रृंखला, *राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन*, का चौथा अध्याय है। इस अध्याय में, हम "पुराने नियम के कैनन" पर ध्यान देंगे। शब्द "कैनन" एक प्राचीन यूनानी और लैटिन शब्द है जिसका अर्थ है हमारा "मापदंड" या "माप"। और इस अध्याय में, हम देखेंगे कि कैसे पवित्रशास्त्र को हर समय के उसके लोगों के लिए परमेश्वर के आधिकारिक मापदंड के रूप में लिखा गया था।

पुराने नियम के सभी लेखकों का मानना था कि परमेश्वर अपने राज्य को स्वर्ग से पृथ्वी की छोर तक फैला रहा है। उनका यह भी मानना था कि परमेश्वर ने प्रमुख वाचाओं की एक श्रृंखला में स्थापित मूलभूत नीतियों के द्वारा अपने राज्य को संचालित किया। परमेश्वर ने आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद के समय में वाचाएँ बाँधी और नई वाचा भी बाँधी जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि वह भविष्य में आएगी। अब, जहाँ तक हम जानते हैं, जब परमेश्वर ने आदम, नूह और अब्राहम से वाचाएँ बाँधीं तब कोई पवित्रशास्त्र नहीं लिखा गया था। लेकिन जब मूसा और दाऊद के समय में इस्राएल एक राज्य में विकसित हुआ, तो परमेश्वर ने पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के द्वारा अपने लोगों के जीवन में अपनी वाचा की नीतियों को लागू किया। इस पवित्रशास्त्र को सबसे पहले प्राचीन इस्राएल से बात करने के लिए रचा गया था, लेकिन इन्हें परमेश्वर के लोगों की हर पीढ़ी के लिए विश्वास और जीवन का कैनन या मापदंड बनने के लिए भी रचा गया था।

हम इस अध्याय में तीन प्रमुख रणनीतियों के विषय में बात करने के द्वारा पुराने नियम के कैनन पर विचार करेंगे जिनका प्रयोग परमेश्वर के लोगों ने उसके प्राचीन राजकीय वचन को अपने जीवन में लागू करने के लिए किया है। सबसे पहले, हम पुराने नियम को एक दर्पण के रूप में देखेंगे जो विभिन्न विषयों या शीर्षकों पर ध्यान देता है। दूसरा, हम पुराने नियम को इतिहास की ओर एक खिड़की के रूप में देखेंगे। और तीसरा, हम पुराने नियम को एक चित्र के रूप में देखेंगे — साहित्यिक चित्रों की एक श्रृंखला के रूप में जिसने परमेश्वर के लोगों के लिए कुछ दृष्टिकोणों पर बल दिया। ये तीन रणनीतियाँ कभी एक दूसरे से अलग खड़ी नहीं होतीं; वे एक दूसरे पर अत्यधिक आश्रित हैं। लेकिन अपने उद्देश्यों के लिए, हम उनका अलग-अलग अध्ययन करेंगे, हम इससे शुरु करेंगे कि पुराने नियम का कैनन कैसे एक दर्पण की तरह है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कैनन, एक दर्पण के रूप में

क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि जब आप अपने मित्रों के समूह के साथ कोई पुस्तक पढ़ते हैं, तो कुछ बातें आपका ध्यान खींचती हैं और कुछ बातें दूसरों का ध्यान खींचती हैं? पुस्तक में कई अलग-अलग विषयों का उल्लेख हो सकता है, लेकिन हम सब उन बातों पर विशेष ध्यान देते हैं जो हमारे लिए सबसे अधिक महत्व रखती हैं। जब परमेश्वर के लोगों ने पुराने नियम को पढ़ा है, तो ऐसा हमेशा से होता रहा है। पुराने नियम के लेखकों ने कई विषयों पर बात की जब उन्होंने अपनी पुस्तकों के द्वारा परमेश्वर के राज्य के धर्मविज्ञान और परमेश्वर की वाचाओं की नीतियों को अपने लोगों पर लागू किया। और जैसे-जैसे हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो हम इनमें से किसी भी विषय को प्रकट कर सकते हैं जो हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जब हम पुराने नियम के कैनन को एक दर्पण के रूप में देखते हैं, तो हम मुख्य रूप से यह देखते हैं कि पुराना नियम *हमारी* चिंताओं और *हमारे* सवालों के बारे में क्या कहता है, भले ही वे विषय पवित्रशास्त्र के केवल द्वितीयक या छोटे-मोटे पहलू ही क्यों न हों। हम इस रणनीति को "विषयगत विश्लेषण" कहते हैं क्योंकि हम उन तरीकों की खोज करते हैं जिनमें पुराना नियम उन विषयों या शीर्षकों पर ध्यान देता है जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं जब हम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना चाहते हैं।

यह समझने के लिए कि कैसे पुराने नियम का कैनन अक्सर विषयगत विश्लेषण में एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, हम दो विषयों पर बात करेंगे : पहला, इस रणनीति का आधार या औचित्य; और दूसरा, इस रणनीति का केंद्रबिंदु। आइए पहले विषयगत विश्लेषण के आधार को देखें।

आधार

चाहे हम इसे महसूस करें या न करें, जब हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो हमारे अनुभवों से निकलने वाली प्राथमिकताओं से स्वयं को पूरी तरह से अलग करना असंभव है। हम पुराने नियम को उसके लोगों के लिए परमेश्वर के राजकीय वचन के रूप में देखते हैं। इसलिए, किसी न किसी हद तक, हम हमेशा इन वचनों के पास यह जानने की आशा में जाते हैं कि वे उन विषयों को कैसे संबोधित करते हैं जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। लेकिन आम तौर पर ऐसा करना एक सवाल खड़ा करता है : "क्या ऐसा करना सही है?" क्या *अपने* हितों को ध्यान में रखते हुए पुराने नियम को पढ़ना सही है?

ऐसे कम से कम दो कारक हैं जो पुराने नियम को हमारे हितों के दर्पण के रूप में देखने के आधार के रूप में कार्य करते हैं : पहला, पवित्रशास्त्र का चरित्र स्वयं इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है; और दूसरा, बाइबल के कई उदाहरण इसकी पुष्टि करते हैं। पहले इस पर विचार करें कि कैसे पवित्रशास्त्र का चरित्र विषयगत विश्लेषण का प्रयोग करता है।

पवित्रशास्त्र का चरित्र

अधिकांश अच्छी तरह से लिखी हुई महत्वपूर्ण पुस्तकों के समान, पुराने नियम की पुस्तकों में कई छोटे तत्व पाए जाते हैं जो खंडों में एक साथ उपयुक्त बैठते हैं। ये छोटे खंड मिलकर बड़े खंड बनते हैं और ये खंड संपूर्ण पुस्तकें बन जाते हैं। इनमें से प्रत्येक स्तर उसमें अपना योगदान देता है जो पुराने नियम की पुस्तकें हमें प्रदान करती हैं। और हमें इनमें से किसी भी स्तर पर अपना ध्यान केंद्रित करने के लिए पूरी तरह से आजाद महसूस करना चाहिए।

दुखद रूप से, कई अच्छे मसीही भी अक्सर पुराने नियम के अनुच्छेदों के अर्थ के बारे में बहुत संकीर्ण रूप से सोचते हैं। वे ऐसे कार्य करते हैं मानो हर अनुच्छेद निर्देश की एक बहुत पतली लेजर किरण प्रस्तुत करता है, और इसका उचित सार निकालने का केवल एक ही तरीका है। लेकिन सच पूछें तो, एक लेजर किरण की तरह होने की अपेक्षा, बाइबल के अनुच्छेदों का महत्व प्रकाश की धीरे-धीरे फैलनेवाली

किरण से अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है। कुछ विषय बहुत महत्वपूर्ण हैं और अनुच्छेद उन पर तेजी से चमकते हैं। ये बाइबल के अनुच्छेदों के और अधिक प्रमुख विषय हैं। और अन्य शीर्षक, शायद "छोटे" विषय हैं जिन्हें ऐसे संबोधित किया जाता है मानो वे कम प्रकाश से प्रकाशित किए गए हों। विषयगत विश्लेषण बाइबल के अनुच्छेदों के महत्व की इस पूरी श्रृंखला को पहचानता है और अक्सर द्वितीयक या छोटे-मोटे विषयों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। वास्तव में, विषयगत विश्लेषण में छोटे विषय आम तौर पर अध्ययन के प्राथमिक विषय बन जाते हैं।

हम जो कहना चाह रहे हैं इसका एक सरल उदाहरण देने के लिए, आइए उत्पत्ति 1:1, अर्थात् बाइबल की पहली पंक्ति को देखें। वहाँ हम पढ़ते हैं, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:1)। अब, यदि हम स्वयं से पूछें, "यह पद क्या सिखाता है?" एक बार देखने पर, हम सोच सकते हैं कि इसका उत्तर बहुत सरल है : उत्पत्ति 1:1 हमें बताता है कि परमेश्वर ने संसार की रचना की। हममें से अधिकांश शायद इस बात से सहमत होंगे कि इस पद के मुख्य विचार का सार प्रस्तुत करने का यह एक उचित तरीका है। लेकिन, यह सारांश चाहे जितना भी सही क्यों न हो, यदि हम स्वयं को इस केंद्रीय शीर्षक तक ही सीमित रखते हैं, तो हम ऐसे कई अन्य विषयों को अनदेखा कर देते हैं जिनके विषय में यह पद बताता है।

इन कुछ शब्दों में कितने विषय या अभिप्राय प्रकट होते हैं? वास्तव में, यह सूची काफी लंबी है। इस तथ्य के बारे में बात करने के अलावा कि परमेश्वर ने संसार की रचना की, यह पद ऐसे धर्मवैज्ञानिक विषयों को भी दर्शाता है कि "परमेश्वर है" और "परमेश्वर सृष्टि से भी पहले से अस्तित्व में है।" यह हमें यह भी बताता है कि परमेश्वर इतना सामर्थी है कि वह रचना कर सकता है और परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में समझा जाना चाहिए।

उत्पत्ति 1:1 हमें सृष्टि के बारे में भी बताता है। यह हमें यह सच्चाई बताता है कि सृष्टि की एक घटना घटी थी, एक ऐसा समय जब सब वस्तुएँ रची गई थीं। यह प्रकट करता है कि सृष्टि आत्मनिर्भर नहीं है; यह अपने अस्तित्व के लिए परमेश्वर पर निर्भर है। और यह बताता है कि आकाश सृष्टि का एक पहलू है और पृथ्वी सृष्टि का एक पहलू है। यह एक पद ऐसे और कई अन्य छोटे-छोटे विषयों को दर्शाता है, और हम उचित रूप में उनमें से किसी पर भी अपना ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

यदि उत्पत्ति 1:1 जैसे केवल एक पद में इतने सारे विषय प्रकट होते हैं, तो कल्पना करें कि बड़े अनुच्छेदों में कितने विषय प्रकट होते हैं। पुराने नियम के अधिकांश लंबे अनुच्छेद हमारे हितों और हमारे अनुभवों से संबंधित कई विषयों पर बात करते हैं। निस्संदेह, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम अपने विचारों को पवित्रशास्त्र में डालकर उसे न पढ़ें। लेकिन यदि पुराने नियम के अनुच्छेद स्पष्ट रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किन्हीं विषयों को संबोधित करते हैं, तो हमारे लिए इन विषयों से लाभ प्राप्त करना बिल्कुल सही है।

हम विषयगत विश्लेषण के बाइबल-आधारित उदाहरणों में पुराने नियम को दर्पण के रूप में मानने का आधार भी देख सकते हैं। बाइबल में ईश्वरीय रूप से प्रेरित बाइबल के लेखकों और आधिकारिक चरित्रों ने अक्सर पुराने नियम के अनुच्छेदों के अपेक्षाकृत छोटे पहलुओं की ओर ध्यान खींचा है।

बाइबल के उदाहरण

केवल एक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में, इब्रानियों 11:32-34 पर विचार करें :

> गिदोन, और बाराक और शिमशोन, और यिफतह, और दाऊद और शमूएल और भविष्यद्वक्ताओं... ने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ प्राप्त कीं; सिंहों के मुँह बन्द किए; आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले; निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार भगाया (इब्रानियों 11:32-34)।

न्यायियों की पुस्तक में यिप्तह और शिमशोन की कहानियों से परिचित हर कोई जानता है कि पुस्तक ने इन लोगों को लगातार एक अच्छे संदर्भ में प्रस्तुत नहीं किया है। वास्तव में, न्यायियों की पुस्तक के लेखक ने इतिहास की इस अवधि के दौरान यिप्तह और शिमशोन सहित इस्राएल के अगुवों की नैतिक विफलताओं की ओर बार-बार ध्यान खींचा। उसने यह दर्शाने के लिए उनकी विफलताओं को प्रकट किया कि न्यायी परमेश्वर के लोगों को पर्याप्त मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम नहीं थे।

फिर भी, न्यायियों की पुस्तक में यिप्तह और शिमशोन के विवरण इन दोनों न्यायियों के बारे में सकारात्मक बातें भी बताते हैं, लेकिन वे अपेक्षाकृत छोटे विषय हैं। जब ये दोनों व्यक्ति विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर मुड़े तो उन्होंने परमेश्वर के शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। अतः इब्रानियों के लेखक ने, जब वह पुराने नियम में विश्वास के उदाहरणों को खोज रहा था, इन लोगों की सकारात्मक उपलब्धियों से बातों को लिया। यद्यपि उसने इन छोटे विषयों पर जोर दिया जो उसके लिए महत्वपूर्ण थे, फिर भी इब्रानियों का लेखक न्यायियों की पुस्तक के प्रति विश्वासयोग्य रहा।

> नए नियम के लेखक पुराने नियम के विवरण के छोटे बिंदुओं का उल्लेख कर सकते हैं और उन बिंदुओं से वर्तमान में प्रयोग होनेवाली बातों को भी ले सकते हैं, जब तक कि वे उस लेख के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं। यीशु एक आश्चर्यजनक दावा करता है। वह कहता है कि परमेश्वर की व्यवस्था के पूरा होने से पहले परमेश्वर के वचन से एक मात्रा या एक बिंदु भी नहीं टलेगा। और एक बात जो हम उससे ले सकते हैं वह यह है कि पवित्रशास्त्र का प्रत्येक भाग, बड़े से लेकर छोटा, परमेश्वर से प्रेरणा-प्राप्त है, अर्थपूर्ण है, और यह महत्वपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण है। और इसलिए, हम वास्तव में नए नियम में इसके कई उदाहरण देखते हैं — हम देखते हैं कि नए नियम के लेखक पुराने नियम की घटनाओं और शिक्षाओं का उल्लेख करते हैं और उनमें से छोटे-छोटे बिंदु, अर्थात् वर्तमान प्रयोग के बिंदु भी निकालते हैं। अध्याय 11 में इब्रानियों का लेखक पुराने नियम के कई पवित्र लोगों की सूची दर्शाता है और उनके विशेष अनुभवों से सामान्य सिद्धातों को लेता है जो सुसमाचार के प्रति उनकी व्यापक आशा के सन्दर्भ में हर जगह के सब विश्वासियों पर लागू होते हैं।
>
> — रेव्ह. केविन लेबी

अब जब हमने पुराने नियम को दर्पण के रूप में देखने का आधार या औचित्य देख लिया है, तो हमें अपना ध्यान इस रणनीति के केंद्र की ओर लगाना चाहिए।

केंद्र

पुराने नियम में हमारी रुचियाँ व्यक्ति से व्यक्ति, समय से समय और स्थान से स्थान के आधार पर अलग-अलग होती हैं। और इस कारण, जब हम पुराने नियम को दर्पण के रूप में देखते हैं, तो हम विभिन्न प्रकार के विषयों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। विषयगत विश्लेषण की यह विस्तृत श्रृंखला कुमरान या मृत सागर, अन्य प्रारंभिक यहूदी ग्रंथों और तल्मूड के लेखन में प्राचीन यहूदी व्याख्याओं में भी पाई जाती है। प्रत्येक सदी में पुराने नियम की मसीही व्याख्याओं में भी विविधता पाई जाती है। फिर भी, जब हम विषयगत विश्लेषण के द्वारा पवित्रशास्त्र को देखते हैं, तो कुछ ऐसे विषय हैं जो आम तौर पर सामने आ जाते हैं।

जब हम विषयगत विश्लेषण के केंद्र पर विचार करते हैं, तो पहले हम धर्मवैज्ञानिक सिद्धांतों पर बल देने के बारे में, दूसरा, उदाहरणों पर बल देने के बारे में, और तीसरा, व्यक्तिगत जरूरतों पर ध्यान देने के बारे में बात करेंगे। शायद सबसे व्यापक ध्यान यह समझने पर रहा है कि पुराने नियम के अनुच्छेद धर्मवैज्ञानिक सिद्धांतों के बारे में क्या कहते हैं।

सिद्धांत

सदियों से, पुराने नियम को पारंपरिक सैद्धांतिक विषयों पर आधिकारिक शिक्षाओं के स्रोत के रूप में देखा जाता रहा है। उदाहरण के लिए, मसीही धर्मविज्ञानी अक्सर विधिवत धर्मविज्ञान के विषयों से निकले प्रश्नों को पूछने के द्वारा विषयगत विश्लेषण का प्रयोग करते हैं। हम पुराने नियम के एक अनुच्छेद को लेकर पूछते हैं, "यह परमेश्वर के गुणों के बारे में क्या कहता है?" "यह मनुष्यजाति की दशा के बारे में क्या कहता है?" "यह उद्धार के धर्म-सिद्धांत या पाप के विरुद्ध दंड के धर्म-सिद्धांत के बारे में क्या कहता है?" शायद आपने कोई शीर्षक-आधारित बाइबल देखी हो जो पुराने नियम के अनुच्छेदों को इन और समान विषयों के अनुसार व्यवस्थित करती है। हो सकता है कि इस प्रकार के विषय उन अनुच्छेदों का मुख्य बिंदु न हों। लेकिन यदि वचन के लेख उन्हें स्पष्ट रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से दर्शाते हैं, तो हम ऐसे कई पारंपरिक प्रश्नों के उत्तर पा सकते हैं जो हमें चिंतित करते हैं।

धर्म-सिद्धांत संबंधी विषयगत विश्लेषण अक्सर प्रमाण-लेखनों का रूप लेता है — अर्थात् पुराने नियम के विशेष अनुच्छेदों के त्वरित उल्लेख जो इस या उस शिक्षा का समर्थन करते हैं। लगभग हर बार जब हम विधिवत धर्मविज्ञान, विश्वास के एक अंगीकरण, या कलीसिया के किसी आधिकारिक धर्म-सिद्धांत संबंधी कथन पर कोई पुस्तक पढ़ते हैं, तो हमें पुराने नियम के ऐसे कई उल्लेख मिलते हैं जिन्हें सैद्धांतिक मान्यताओं का समर्थन करने के लिए दिया जाता है।

दुखद रूप से, कुछ धर्मविज्ञानियों ने कई बार पुराने नियम के लेखनों का इतना गलत तरीके से इस्तेमाल किया है कि कई व्याख्याकारों ने प्रमाण-लेखन की प्रक्रिया को पूरी तरह से ठुकरा दिया है। लेकिन यदि कोई अनुच्छेद किसी विषय के बारे में बात करता है, तो प्रमाण-लेखन बाइबल के अनुच्छेदों के विषयों को प्रकट करने के लिए वैध, और त्वरित तरीके हैं, फिर चाहे ही ये विषय छोटे-मोटे ही हों।

धर्म-सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित करने के अतिरिक्त, विषयगत विश्लेषण का एक और सामान्य रूप नैतिक उदाहरणों को प्रकट करना है। अक्सर, हम उन चरित्रों के लिए पुराने नियम की ओर देखते हैं जिनका हमें अनुकरण करना चाहिए या जिन्हें हमें ठुकरा देना चाहिए।

उदाहरण

उदाहरण के लिए, 1 शमूएल 17 में दाऊद और गोलियत की प्रसिद्ध कहानी पर विचार करें। सदियों से, पासवानों ने विश्वासियों के अनुकरण के लिए दाऊद को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है। हम अक्सर शाऊल के हथियारों को अस्वीकार करने, परमेश्वर की सामर्थ्य पर भरोसा करने, और गोलियत को हराने के लिए दाऊद की प्रशंसा को सुनते हैं। जब विश्वासी अपनी व्यक्तिगत आत्मिक चुनौतियों का सामना करते हैं, तो दाऊद के व्यवहार, शब्दों और कार्यों को सब विश्वासियों के लिए आदर्शों के रूप में माना जाता है।

दुःख की बात है कि हाल ही के दशकों में कई व्याख्याकारों ने इस बात पर बल दिया है कि 1 शमूएल 17 में दाऊद को एक नैतिक उदाहरण के रूप में देखना अनुचित है। उनका तर्क है कि शमूएल की पुस्तक के इस खंड की रचना यह समझाने के लिए की गई थी कि इस्राएल के स्थायी राजकीय राजवंश के रूप में क्यों दाऊद के घराने ने शाऊल के घराने की जगह ले ली। अतः उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि गोलियत पर दाऊद की जीत से मसीहियों को केवल दाऊद के महान पुत्र मसीह और बुराई पर उसकी अंतिम विजय के बारे में ही सोचना चाहिए। यह एक प्रमुख विषय है, लेकिन यह किसी भी तरह से एकमात्र निर्देश नहीं है जिसे हम इस अनुच्छेद से प्राप्त कर सकते हैं। अपनी परिस्थितियों में दाऊद के विश्वास का अनुकरण प्रत्येक विश्वासी को करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे नया नियम हमें मसीह का अनुकरण करने के लिए कहता है।

पुराना नियम अनुकरण करने या अस्वीकार किए जानेवाले उदाहरणों से भरा हुआ है। और इन उदाहरणों को खोजना विषयगत विश्लेषण के द्वारा पुराने नियम की आधिकारिक शिक्षा में गहराई से जाने का एक उचित तरीका है।

धर्मवैज्ञानिक सिद्धांतों और बाइबल के उदाहरणों के अतिरिक्त, विषयगत विश्लेषण का तीसरा आम और उचित केंद्र व्यक्तिगत जरूरतों के लिए भक्तिपूर्ण रूप से पढ़ना है। विषयगत विश्लेषण हमें यह समझने में मदद करता है कि पुराने नियम के अनुच्छेद किस प्रकार उन विभिन्न विषयों को संबोधित करते हैं जिनका सामना विश्वासी अपने व्यक्तिगत जीवन में करते हैं।

व्यक्तिगत आवश्यकताएँ

हम सब ने पुराने नियम से ऐसी बातों को सुना है कि एक अच्छा पिता या अच्छी माँ कैसे बनें, काम में कैसे सफल हों, परमेश्वर की आराधना कैसे करें, या भावनात्मक संघर्षों से कैसे निपटें। पुराने नियम के अनुच्छेदों को अक्सर विषयगत विश्लेषण के द्वारा इस प्रकार की व्यक्तिगत चिंताओं को संबोधित करने के एक तरीके के रूप में देखा जाता है। यद्यपि ये बातें बाइबल के अनुच्छेदों की केवल छोटी-मोटी विशेषताएँ हो सकती हैं, फिर भी हमारे लिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है कि पुराना नियम उन्हें कैसे संबोधित करता है।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर के सेवक पिताओं को एक पिता के रूप में दाऊद की विफलताओं के बारे में उचित रूप से चेतावनी देते हैं। वे याकूब द्वारा पत्नी पाने के लिए उसके 14 वर्षों के परिश्रम से कड़ी मेहनत के सिद्धांतों को लेते हैं। पासवान आराधना के तत्वों को दर्शाने के लिए मलिकिसिदक और अब्राहम की कहानी की ओर मुड़ते हैं। वे आत्मिक तनाव का सामना करनेवाले विश्वासियों का मार्गदर्शन करने के लिए कर्मेल पर्वत के बाद के एलिय्याह के भावनात्मक संघर्षों को देखते हैं।

> मुझे लगता है कि बाइबल मुख्य रूप से हमारे नैतिक जीवन के लिए विश्वसनीय मार्गदर्शक है क्योंकि बाइबल न केवल ऐसे लोगों की घटनाएँ बताती है जो असफल तो हुए, पर उन्हें फिर से स्थापित किया गया, बल्कि साथ ही ऐसे लोगों के बारे में भी बताती है जो असफल हुए और फिर कभी स्थापित नहीं किए गए, ताकि हम यह समझ सकें कि परमेश्वर आज भी हमें क्षमा करने के लिए उपस्थित है। और जब वह हमें पुनर्स्थापित करता है, तो हम परमेश्वर के अनुग्रह के कारण विजयी जीवन जी सकते हैं... और इसलिए मेरे विचार से बाइबल हमारे नैतिक जीवन के लिए एक विश्वसनीय मार्गदर्शक है। हम बाइबल का दुरुपयोग नहीं कर सकते। हम बाइबल को गलत तरीके से उद्धृत नहीं कर सकते, मुख्य रूप से इसलिए कि जिन घटनाओं में लोग असफल हुए, उनसे हम सीखें न कि उनके व्यवहार को दोहराएँ, बल्कि उनके व्यवहार से सीखें, यह देखें कि हम कहाँ पाप के प्रति झुकाव रखते हैं, कहाँ हम अधिक असफल हो जाते हैं, और इस प्रकार मसीह से अगुवाई पाने की प्रार्थना करते हुए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से सुरक्षित रहें ताकि परमेश्वर हमारे जीवन में प्रमुखता रखे।
>
> — डॉ. आशीष क्रिसपाल

विषयगत विश्लेषण के द्वारा पुराने नियम को एक दर्पण के रूप में देखने के कई रूप होते हैं। और यह रणनीति इतनी बहुमूल्य है कि हमें कभी इसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। जब हम पुराने नियम के कैनन की खोज करते हैं, तो पवित्रशास्त्र में प्रस्तुत हर विषय पर ध्यान देना सही है, यहाँ तक कि उनके छोटे-मोटे विषयों पर भी।

अब जब हमने कुछ ऐसे तरीके देख लिए हैं जिनके द्वारा हम पुराने नियम के कैनन को एक दर्पण के रूप में देख सकते हैं, तो हम उस दूसरी प्रमुख रणनीति की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं जिसका परमेश्वर के लोगों ने अनुकरण किया है — पुराने नियम के कैनन को इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखना।

कैनन, एक खिड़की के रूप में

बार-बार, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने इस्राएल को चेतावनी दी कि परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य सेवा के लिए उन्हें यह याद रखना जरूरी है कि परमेश्वर ने अतीत में उनके लिए क्या किया था। इस चेतावनी के जवाब में, इस्राएल के विश्वासयोग्य लोगों और मसीही कलीसिया ने हमेशा पुराने नियम को इतिहास की खिड़की के रूप में देखा है। बाइबल का विश्वास पौराणिक कथाओं, राजनीतिक प्रचार या अमूर्त दर्शन में स्थापित नहीं है। बल्कि, यह इस तथ्य में स्थापित है कि परमेश्वर ने इतिहास में कार्य किया है और कि पवित्रशास्त्र हमें उसका एक भरोसेमंद विवरण प्रदान करते हैं जो परमेश्वर ने किया है। पवित्र आत्मा ने अक्सर पुराने नियम के लेखकों को इतिहास में परमेश्वर के कार्यों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। और इस कारण, पुराने नियम की पुस्तकों का ऐतिहासिक विश्लेषण पुराने नियम को समझने और उसे हमारे जीवन में लागू करने की एक महत्वपूर्ण रणनीति है।

जब हम अतीत की घटनाओं से संबंधित एक साधारण पुस्तक पढ़ते हैं, तो स्वाभाविक है कि हमारा ध्यान उसमें दी गई ऐतिहासिक घटनाओं की ओर जाए। कई बार हम इतिहास में इतने खो जाते हैं कि हम अपने अनुभवों से उत्पन्न विषयों के बारे में सोचना बंद कर देते हैं। इसके बजाय, हम पुस्तक में होनेवाली घटनाओं को देखते हैं और कल्पना करते हैं कि जिन दिनों का इसमें वर्णन किया गया है, तब बातें कैसी रही होंगी।

इसी प्रकार, पुराने नियम का कैनन संसार का वैसे वर्णन करता है जैसा कि यह बहुत पहले था। और परमेश्वर के लोगों ने पुराने नियम को एक ऐसी खिड़की के रूप में देखने के द्वारा जो हमें उस संसार को देखने की अनुमति देती है, अपने जीवन को परमेश्वर के राजकीय अधिकार में समर्पित कर दिया है। हम इस रणनीति को "ऐतिहासिक विश्लेषण" कहेंगे क्योंकि यह पिछली घटनाओं पर और इन घटनाओं के बारे में पुराना नियम जो कहता है, उस पर केंद्रित है।

पुराने नियम के कैनन के ऐतिहासिक विश्लेषण का अध्ययन करने के लिए, हम एक बार फिर दो विषयों को देखेंगे : पहला, पुराने नियम को इतिहास की खिड़की के रूप में देखने का आधार या औचित्य, और दूसरा, इस रणनीति का केंद्र। आइए पहले हम पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार को देखें।

आधार

दुखद रूप से, सदियों से कई पुरातत्वविदों और इतिहासकारों ने दावा किया है कि कोई भी विवेकपूर्ण व्यक्ति यह नहीं मानता है कि पुराने नियम का कैनन ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय है। उनके दृष्टिकोण में, यह काल्पनिक पवित्र कथा से अधिक कुछ नहीं है जो कुछ आत्मिक या नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों की विश्वसनीयता के बारे में यह संदेह बहुत लंबे समय से इतना व्यापक रहा है कि इसने कुछ सुसमाचारिक मसीहियों को भी प्रभावित किया है। कुछ सुसमाचारिक लोगों ने पुराने नियम को इतिहास की खिड़की के रूप में देखना छोड़ दिया है।

पुराने नियम का ऐतिहासिक विश्लेषण करने के कई कारण हैं। लेकिन सुसंगतता के लिए, हम स्वयं को उन दो विषयों तक सीमित रखेंगे जिन पर हमने पहले चर्चा की थी : पवित्रशास्त्र का चरित्र और बाइबल के उदाहरण। आइए पहले इस बारे में सोचें कि पवित्रशास्त्र का चरित्र किन रूपों में ऐतिहासिक विश्लेषण के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

पवित्रशास्त्र का चरित्र

2 तीमुथियुस 3:16 में पौलुस के जाने-पहचाने शब्दों को सुनें :

> सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है" (2 तीमुथियुस 3:16)।

यीशु और उसके पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए, मसीही पुष्टि करते हैं कि पुराना नियम परमेश्वर की ओर से है, कि यह प्रेरणा-प्राप्त है, या "परमेश्वर की श्वास से निकला है"। इस शिक्षा के अनुरूप, मसीहियों की जिम्मेदारी है कि वे इस विश्वास के साथ पुराने नियम का अध्ययन करें कि पवित्रशास्त्र का प्रत्येक दावा सच्चा है।

> दूसरा तीमुथियुस 3:16 हमें विश्वासियों के रूप में बाध्य करता है कि हम पुराने नियम के वचनों और उनके ऐतिहासिक दावों को सच मानें, क्योंकि पवित्रशास्त्र के उस अनुच्छेद, अर्थात् 2 तीमुथियुस 3:16 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर का वचन परमेश्वर के श्वास से निकला है। और इसलिए, एक सिद्ध परमेश्वर से एक सिद्ध वचन आता है, जो कि त्रुटिरहित है। पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, हम पवित्रशास्त्र की अचूकता और त्रुटिरहितता में विश्वास करते हैं। और इसलिए, उस पूर्वधारणा से शुरु करके हम समझते हैं कि इतिहास की बातों के संबंध में बाइबल जो कहती है वह सच है।
>
> — रेव्ह. केविन लेबी

जैसे नए नियम का विश्वास इस पर आधारित है कि परमेश्वर ने वास्तव में इतिहास में मसीह के द्वारा क्या किया, वैसे ही पुराने नियम की सभी शिक्षाएँ इस पर आधारित हैं कि परमेश्वर ने मसीह से पहले इतिहास में वास्तव में क्या किया। इस कारण, मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायी पुष्टि करते हैं कि पुराने नियम का प्रत्येक ऐतिहासिक दावा सच्चाई के साथ वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं को प्रस्तुत करता है। जब पुराना नियम सिखाता है कि कुछ घटित हुआ, तो यह स्वयं परमेश्वर के अधिकार के साथ बात करता है। अतः हम आश्वस्त हो सकते हैं कि यह वास्तव में हुआ था।

इस दृष्टिकोण के विरुद्ध कई प्रकार की आपत्तियाँ उठाई गई हैं। उदाहरण के लिए, कई विद्वान इस बात पर बल देते हैं कि पवित्रशास्त्र इतना चयनात्मक है कि उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यह सच है कि पुराने नियम का ऐतिहासिक विवरण बहुत चयनात्मक है। यह जितना प्रकट करता है उससे कहीं अधिक छोड़ देता है। लेकिन इससे हमें बिल्कुल भी हैरान नहीं होना चाहिए। आपको याद होगा कि प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना 21:25 में यीशु के जीवन के बारे में यह कहा है :

> और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं (यूहन्ना 21:25)।

यदि यह सच है कि संसार यीशु के जीवन का वर्णन करने के लिए आवश्यक पुस्तकों को अपने में समा नहीं सकता, तो हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि पुराना नियम अपने समय में हुई अनगिनत घटनाओं का केवल एक छोटा सा भाग ही बताता है। फिर भी, यह चयनात्मकता इतिहास के बारे में पवित्रशास्त्र हमें जो बताता है उसकी सच्चाई पर कोई असर नहीं डालती।

बाइबल के संशयवादी व्याख्याकारों ने पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर भी आपत्ति जताई है क्योंकि यह अलौकिक घटनाओं का वर्णन करता है। पुराने नियम के विवरण में परमेश्वर और आत्माएँ प्रमुख भूमिका निभाते हैं, और यह तथ्य अक्सर आधुनिक प्रकृतिवादी व्याख्याकारों को पसंद नहीं आता। लेकिन इससे हमें परेशान नहीं होना चाहिए क्योंकि मसीही विश्वास शुरू से अंत तक एक

अलौकिक विश्वास है। जो कोई भी मृतकों में से जी उठे प्रभु के रूप में मसीह का अनुसरण करता है, उसे पुराने नियम में बताई गई अलौकिक घटनाओं पर विश्वास करने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए।

> मेरा मानना है कि लोगों के लिए यह समझना और विश्वास करना महत्वपूर्ण है कि बाइबल में बताई गई अलौकिक घटनाएँ भरोसेमंद हैं क्योंकि यह बाइबल की विश्वसनीयता की बात करती है... जैसा कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 15 में कहता है, यदि मसीह का पुनरुत्थान नहीं हुआ, तो हमारा विश्वास व्यर्थ है; हम आज भी अपने पापों में हैं। इसी तरह, यदि निर्गमन नहीं हुआ, यदि निर्वासन नहीं हुआ, यदि निर्वासन से पुनर्वापसी नहीं हुई, यदि ये बातें उस तरह से नहीं घटीं जैसे बाइबल के लेखक उनका वर्णन करते हैं, यदि मसीह सचमुच मृतकों में से जी नहीं उठा, तो हमारे विश्वास के आधार पर ही प्रश्न उठ जाता है। यदि ये घटनाएँ वैसी नहीं हैं जैसी वे सचमुच घटित हुईं, तो बाइबल आप ही भरोसेमंद नहीं है। और यदि बाइबल आप ही भरोसेमंद नहीं है, तो हमारे पास इसकी सटीक तस्वीर नहीं है कि परमेश्वर अपने लोगों पर क्या प्रकट कर रहा है। इसलिए, अलौकिक घटनाएँ उस प्रकाशन की विश्वसनीयता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो हमें परमेश्वर से प्राप्त हुआ है।
>
> — डॉ. जिम जॉर्डन

शायद पुराने नियम की ऐतिहासिक सच्चाई पर सबसे बड़ी आपत्ति आधुनिक वैज्ञानिक खोज से आती है। अत्यधिक सम्मानित पुरातत्वविदों और अन्य वैज्ञानिकों ने ऐसे प्रमाणों की ओर संकेत किया है जो उनके विचार से पुराने नियम की विश्वसनीयता को खारिज करते हैं। उदाहरण के लिए, भूविज्ञानी सृष्टि की रचना के विवरण और नूह के समय में आए जल-प्रलय पर सवाल उठाते हैं। पुरातत्वविद बाइबल की कई ऐतिहासिक घटनाओं की प्रस्तुति के विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

हम सभी को यह स्वीकार करना चाहिए कि पुराने नियम के ऐतिहासिक दावों और वैज्ञानिक खोज के बीच सामंजस्य स्थापित करना कभी-कभी कठिन होता है। लेकिन यह जानना जरूरी है कि ऐसा क्यों है। पुराने नियम और आधुनिक विज्ञान के बीच तनाव क्यों हैं? ऐसे कम से कम तीन कारण हैं जिनके कारण पुराना नियम वैज्ञानिक प्रमाणों के विरोध में प्रतीत हो सकता है।

सबसे पहले, कई बार वैज्ञानिक पवित्रशास्त्र के विरुद्ध अपने दावों का समर्थन करनेवाले प्रमाणों को गलत रीति से समझते हैं। जितना हमें पुरातत्व और अन्य विज्ञानों को महत्व देना चाहिए, उतना यह भी समझना चाहिए कि वैज्ञानिक गलतियाँ करते हैं। उनके निष्कर्ष हमेशा आगे के शोध के द्वारा सुधारे जाने के अधीन होते हैं। उदाहरण के लिए, अतीत में कई विद्वानों ने इस बात पर बल दिया था कि पुराने नियम में हित्ती लोगों का उल्लेख करते समय गलती हुई थी क्योंकि बाइबल के अतिरिक्त हित्तियों का कोई और विवरण उपलब्ध नहीं है। लेकिन पिछली सदी में पुरातत्वविदों ने हित्ती संस्कृति की खोज की। वास्तव में, हित्तियों के लेखनों ने पुराने नियम के अध्ययनों में बहुत उपयोगी विचार प्रदान किए हैं। लगभग उसी तरह, एक सदी पहले यह एक स्थापित विद्वानी मत था कि निर्गमन और विजय से संबंधित पुराने नियम की अवधि बहुत पहले की थी। परंतु हाल के दशकों में, पुरातात्विक विवरणों का फिर से मूल्यांकन किया गया है, और यहाँ तक कि अविश्वासियों द्वारा भी बाइबल के विवरण के पक्ष में मजबूत तर्क दिए गए हैं। ये और अनगिनत अन्य उदाहरण हमें इस सच्चाई के प्रति सचेत करते हैं कि जब पुराना नियम वैज्ञानिक प्रमाण से मेल नहीं खाता है, तो ऐसा हो सकता है कि वैज्ञानिक अपने प्रमाण के आकलन में गलत हों।

वैज्ञानिक खोज और बाइबल के विवरण के बीच विरोधाभास होने का एक दूसरा कारण यह हो सकता है कि बाइबल के व्याख्याकारों ने पुराने नियम को ही गलत समझा हो। इस तरह के विवाद का सबसे अच्छा उदाहरण 17वीं शताब्दी की शुरुआत में गैलीलियो और कलीसिया अधिकारियों के बीच का संघर्ष है। गैलीलियो ने तर्क दिया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है; जबकि, कलीसिया ने पवित्रशास्त्र

के आधार पर तर्क दिया कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। इस विवाद का अधिकांश भाग यहोशू 10:13 पर केंद्रित है, जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **और सूर्य उस समय तक थमा रहा, और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा...सूर्य आकाशमण्डल के बीचोंबीच ठहरा रहा, और लगभग चार पहर तक न डूबा (यहोशू 10:13)।**

सदियों से, कलीसिया ने इस पद का अर्थ यह निकाला था कि सूर्य ने सचमुच कुछ समय के लिए पृथ्वी के चारों ओर घूमना बंद कर दिया था, और उन्होंने सौर मंडल की संभावना को नकार दिया था। परंतु आज वैज्ञानिक जाँच ने मजबूती से स्थापित कर दिया है कि दिन और रात पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के कारण बनते हैं जब यह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है। फलस्वरूप, अधिकांश आधुनिक मसीहियों ने यहोशू 10:13 की व्याख्या करने का तरीका बदल दिया है। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि यहोशू के लिए दिन का उजाला चमत्कारिक रूप से बढ़ गया था। लेकिन अब हम इस पद को और इसके जैसे अन्य पदों को सामान्य, घटनात्मक भाषा के रूप में लेते हैं, चीजों के बारे में वैसे बात करते हैं जैसी वे दिखाई देती हैं, जैसे कि हम "सूर्योदय" और "सूर्यास्त" के बारे में आधुनिक संसार में बात करते हैं। सौर मंडल के वैज्ञानिक प्रमाण की शक्ति ने हमें पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित नहीं किया है, बल्कि इसने हमें पुराने नियम के इस भाग की हमारी व्याख्या को सही करने में सहायता की है।

इसका तीसरा कारण कि क्यों वैज्ञानिक प्रमाण और पवित्रशास्त्र कई बार बेमेल लगते हैं : हो सकता है कि हमने दोनों को गलत समझा हो। वैज्ञानिकों और बाइबल के व्याख्याकारों में गलती करने की संभावना रहती है। इसलिए हमें हमेशा इस संभावना के प्रति खुला रहना चाहिए कि आगे की खोज दर्शाएगी कि वैज्ञानिक और बाइबल के व्याख्याकार दोनों गलत हैं।

जब हम पुराने नियम का ऐतिहासिक विश्लेषण करते हैं, तो हमें हमेशा यह ध्यान में रखना चाहिए कि वास्तविक इतिहास और पुराने नियम के विवरण के बीच कुछ स्पष्ट विपरीतताएँ कभी दूर नहीं हो सकतीं। अध्ययन का प्रत्येक संकाय पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता में हमारे भरोसे के लिए नई चुनौतियाँ प्रस्तुत करता रहेगा, और हमें इन सब चुनौतियों के समाधान की आशा नहीं करनी चाहिए। हम अक्सर कुछ हद तक समझ हासिल कर सकते हैं, और कुछ विश्वसनीय समाधान भी प्रस्तुत कर सकते हैं, लेकिन फिर भी इस बिंदु पर नहीं पहुँच पाते कि हम सब ऐतिहासिक कठिनाइयों को दूर कर दें।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणों और पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण के बीच चाहे जितना भी तनाव पाया जाए, फिर भी परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को उसका पालन करना चाहिए जो मसीह और उसके पहली सदी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने पवित्रशास्त्र के बारे में सिखाया है। पुराने नियम की ईश्वरीय प्रेरणा इसकी ऐतिहासिक सच्चाई को स्थापित करती है। और इस कारण, हम पुराने नियम को इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखने में सही हैं।

अब जब हमने देख लिया है कि पवित्रशास्त्र का चरित्र किस प्रकार ऐतिहासिक विश्लेषण का समर्थन करता है, तो हमें पुराने नियम के इस दृष्टिकोण के दूसरे आधार या औचित्य की ओर मुड़ना चाहिए : बाइबल के उदाहरण।

बाइबल के उदाहरण

पवित्रशास्त्र में बाइबल के लेखकों और आधिकारिक बाइबल चरित्रों के कई उदाहरण पाए जाते हैं जिन्होंने पुराने नियम की ऐतिहासिक सच्चाई की पुष्टि की है। संपूर्ण पवित्रशास्त्र में, बाइबल के लेखकों द्वारा पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर सवाल उठाने का एक भी उदाहरण नहीं है। उदाहरण के लिए, इस पर विचार करें कि 1 इतिहास 1:1-4 में इतिहास का लेखक किस प्रकार अपनी वंशावलियों में पुराने नियम की ऐतिहासिकता पर निर्भर रहा। उसने अपनी वंशावली इस प्रकार शुरू की :

> आदम, शेत, एनोश, केनान, महललेल, येरेद; हनोक, मतूशेलह, लेमेक; नूह, शेम, हाम और येपेत (1 इतिहास 1:1-4)।

आधुनिक मसीहियों के लिए, इतिहास के लेखक ने यहाँ कुछ महत्वपूर्ण कार्य किया। उसने उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों में से तेरह पुरुषों का उल्लेख करने के द्वारा उत्पत्ति के पहले पाँच अध्यायों को ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय माना। अधिकांश आधुनिक लोग इन अध्यायों को पौराणिक या काल्पनिक मानते हैं। लेकिन इतिहासकार ने ऐतिहासिक विश्वसनीयता में अपना पूरा भरोसा प्रकट किया, यहाँ तक कि उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों में भी। जब वह पुराने नियम की कई अन्य पुस्तकों पर भरोसा करते हुए आगे बढ़ा, तो उसने इतिहास की एक आधिकारिक खिड़की के रूप में उत्पत्ति की पुस्तक का प्रयोग किया।

इसी प्रकार, प्रेरितों के काम 7 में स्तिफनुस के भाषण के लूका के विवरण पर विचार करें। पुराने नियम के विभिन्न भागों का प्रयोग करते हुए, स्तिफनुस ने अब्राहम, इसहाक, याकूब, यूसुफ, मूसा, हारून, यहोशू, दाऊद और सुलैमान को ऐतिहासिक चरित्रों के रूप में बताया। उसने पुष्टि की कि पुराने नियम में उनके बारे में लिखी कहानियाँ सच थीं। जहाँ तक स्तिफनुस का सवाल है, पुराने नियम में बताया गया इतिहास सच था। और उस ऐतिहासिक विवरण ने उसके धर्मविज्ञान के आधार के रूप में कार्य किया जब उन्होंने अपने साथी यहूदियों को मन फिराने और मसीह पर विश्वास करने के लिए बुलाया।

> बाइबल के लेखक इतिहास में परमेश्वर के कार्य के प्रति आश्वस्त हैं, और इसलिए पुराने नियम के शुरुआती पृष्ठों से — उदाहरण के लिए व्यवस्थाविवरण 26 — हम देखते हैं कि इस्राएल की आराधना परमेश्वर के कार्यों पर आधारित है। हमें बताया गया है कि इस्राएलियों को आराधना में अपनी भेंट लानी थी और यह कहना था, कि "मेरा पिता [अब्राहम] एक भटकता हुआ अरामी था।" और इस प्रकार परमेश्वर के लोगों की आराधना का एक भाग हमेशा ऐतिहासिक अभ्यास करना, फिर से स्थापित करना, याद करना रहा है — उसे याद करना जो परमेश्वर ने इतिहास में किया है...हम इसे पौलुस के साथ भी देखते हैं। जब वह पिसिदिया के अंताकिया के आराधनालय में प्रचार कर रहा है, तो वह परमेश्वर के लोगों के बीच परमेश्वर के कार्य के बारे में बात कर रहा है। वह निर्गमन से शुरू करता है, वह न्यायियों के युग में आता है, और वह कहता है कि परमेश्वर ने अगुवों को खड़ा किया है, और वह इस विषय का प्रयोग करता है : परमेश्वर ने अपनी सामर्थी भुजा से दाऊद के पुत्र को जिलाया, और उसे मरे हुओं में से जिलाया। अतः इतिहास में परमेश्वर का कार्य और उसके वर्णन के लिए पवित्रशास्त्र का प्रयोग करना और उनके विवरण पर निर्भर रहना कुछ ऐसा है जो बाइबल का हर लेखक करता है।
>
> — डॉ. ग्रेगोरी आर. पेरी

अब जब हमने पुराने नियम के सिद्धांत को इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखने का आधार देख लिया है, तो हमें अपना ध्यान दूसरे विषय की ओर लगाना चाहिए : इस व्याख्यात्मक रणनीति का केंद्र क्या है? पुराने नियम की पुस्तकों के ऐतिहासिक विश्लेषण के लक्ष्य क्या हैं?

केंद्र

सामान्य शब्दों में, पुराने नियम को इतिहास की एक खिड़की के रूप में देखने का लक्ष्य पवित्रशास्त्र के अन्य दृष्टिकोणों के लक्ष्य के समान ही है। विश्वासयोग्य लोग अपने ईश्वरीय राजा की इच्छा जानना चाहते हैं। लेकिन ऐतिहासिक विश्लेषण में यह खोजने का एक विशिष्ट तरीका है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को क्या बताया है। पुराने नियम के ऐतिहासिक विश्लेषण का सबसे आधारभूत रूप

ऐतिहासिक पुनर्निर्माण है — यह स्थापित करने के लिए अन्य प्रमाणों के साथ-साथ पुराने नियम का भी प्रयोग करना कि वास्तव में अतीत में क्या हुआ था। लेकिन ऐतिहासिक विश्लेषण ने एक विशिष्ट धर्मवैज्ञानिक रूप भी लिया है। पुराने नियम का प्रयोग अतीत में परमेश्वर के कार्यों और शब्दों की खोज करने और फिर परमेश्वर के लोगों के जीवन में उनके धर्मवैज्ञानिक महत्व को लागू करने के लिए इतिहास की एक खिड़की के रूप में किया गया है।

पिछली सदी में, धर्मवैज्ञानिक ऐतिहासिक विश्लेषण का एक लोकप्रिय रूप "बाइबल-आधारित धर्मविज्ञान" के रूप में प्रसिद्ध हुआ। शब्द "बाइबल-आधारित धर्मविज्ञान" पवित्रशास्त्र के कई अलग-अलग दृष्टिकोणों को दर्शा सकता है, लेकिन हम बाइबल-आधारित धर्मविज्ञान के एक ऐसे रूप को दर्शाएँगे जो सुसमाचारिक मसीहियों के बीच व्यापक है।

बाइबल-आधारित धर्मविज्ञान का यह प्रमुख रूप आम तौर पर दो मुख्य चरणों पर ध्यान केंद्रित करता है : पहला, बाइबल के धर्मविज्ञानी उसकी रचना करते हैं जिसे हम ऐतिहासिक अवधियों का "समकालिक चित्र" कह सकते हैं, और दूसरा, वे पुराने नियम के इतिहास के द्वारा उसकी खोज करते हैं जिसे हम "ऐतिहासिक खोज" कह सकते हैं। ये दोनों चरण अनगिनत तरीकों से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। लेकिन अपने उद्देश्यों के लिए हम एक समकालिक चित्र की रचना करने से शुरु करके उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग करके देखेंगे।

समकालिक चित्र

"समकालिक" शब्द का अर्थ एक निश्चित समयावधि के भीतर होने वाली घटनाओं से है। बाइबल के धर्मविज्ञानी बाइबल के इतिहास की एक अवधि पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा समकालिक चित्रों की रचना करते हैं और फिर उस अवधि के दौरान हुए परमेश्वर के कार्यों और वचनों के जटिल तानेबाने का सार बताते हैं। ये सारांश बाइबल के इतिहास में समय के खंडों को समकालिक इकाइयों या समय के टुकड़ों के रूप में देखते हैं।

अब, हमें यह याद रखने की जरूरत है कि पुराने नियम का इतिहास एक नदी की तरह बहता था। इसका इतिहास अलग-अलग खंडों में विभाजित नहीं था। इसलिए पुराने नियम के इतिहास के समकालिक चित्र बनाना हमेशा कुछ हद तक बनावटी होता है, जैसे बहती हुई नदी को अलग-अलग खंडों में विभाजित करना बनावटी होता है। फिर भी, किसी नदी के विभिन्न खंडों के बारे में बात करना लाभदायक हो सकता है। और उसी तरह, पुराने नियम के इतिहास को समय की अवधियों में बाँटना और उन अवधियों के दौरान परमेश्वर ने क्या किया और क्या कहा, इसका सार प्रस्तुत करना लाभदायक हो सकता है। हम इसे कई अलग-अलग तरीकों से कर सकते हैं।

आपको याद होगा कि परमेश्वर के राज्य पर आधारित हमारे पिछले अध्याय में, हमने अति प्राचीन इतिहास, इस्राएल जाति के इतिहास और भविष्य के नए नियम के इतिहास के संदर्भ में बात की थी। इनमें से प्रत्येक अवधि के दौरान परमेश्वर के वचनों और कार्यों पर ध्यान देने से हमें परमेश्वर के राज्य के बारे में कई बातें समझने में सहायता मिली।

लेकिन आपको यह भी याद होगा कि ईश्वरीय वाचाओं पर आधारित पर हमारे अध्याय में, हमने बाइबल के इतिहास को वाचा की अवधियों में विभाजित किया था। हमने परमेश्वर की सार्वभौमिक वाचाओं, इस्राएल के साथ परमेश्वर की राष्ट्रीय वाचाओं और परमेश्वर की भविष्य की नई वाचा के बारे में बात की थी। और हम इन तीन बड़े युगों को समय की छोटी-छोटी अवधियों में विभाजित करते हुए आगे बढ़े। सार्वभौमिक वाचाओं में आदम के साथ परमेश्वर की वाचा — नींव की वाचा; और नूह के साथ परमेश्वर की वाचा — स्थिरता की वाचा — का युग शामिल था। फिर हमने राष्ट्रीय वाचाओं की अवधि को अब्राहम — इस्राएल के चुनाव या प्रतिज्ञा की वाचा; मूसा — व्यवस्था की वाचा; और दाऊद — राजत्व की वाचा के समयों में विभाजित किया। और हमने नई वाचा की अवधि — पूर्णता की वाचा — को भी इसके उद्घाटन, निरंतरता और पूर्णता में भी विभाजित किया। इन विभाजनों ने हमें राज्य की उन

मूलभूत नीतियों को अलग करने में सहायता की जिन्हें परमेश्वर ने विभिन्न वाचाओं के द्वारा स्थापित किया था। लेकिन ये ऐतिहासिक विभाजन पुराने नियम के इतिहास के समकालिक चित्र बनाने के कई तरीकों में से केवल दो हैं।

उदाहरण के लिए, *विश्वास के वेस्टमिंस्टर अंगीकार* का सातवाँ अध्याय "कार्यों की वाचा" की अवधि — आदम के पाप करने से पहले के समय को — और "अनुग्रह की वाचा" को दर्शाता है जो नए नियम सहित बाइबल के बाकी के इतिहास को सम्मिलित करती है। यह "व्यवस्था के अधीन" अर्थात् पुराने नियम के समय और "सुसमाचार के अधीन" अर्थात् नए नियम की अवधि के बीच अनुग्रह की वाचा में एक महत्वपूर्ण विभाजन को भी दर्शाता है।

पिछली सदी में, प्रिंसटन थियोलोजिकल सेमिनारी के बहुत ही सम्मानित बाइबल धर्मविज्ञानी गीरहार्डस फोस ने अन्य मानदंडों का प्रयोग करके पुराने नियम को विभाजित किया। वाचाओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, उसने ईश्वरीय प्रकाशन के रूप और सामग्री में प्रमुख बदलावों के अनुसार अवधियों की पहचान की। उसने पतन से पहले के छुटकारे से पूर्व की अवधि; पतन के बाद और वाटिका से आदम और हव्वा के निष्कासन से पहले के छुटकारे की अवधि; निष्कासन से लेकर नूह के दिनों के जल-प्रलय तक की अवधि; जल-प्रलय के बाद कुलपतियों तक की अवधि; कुलपतियों की अवधि; मूसा की अवधि; और मूसा के बाद की भविष्यवाणिय अवधि के बारे में बात की। और निस्संदेह, एक मसीही के रूप में उसने नए नियम की अवधि को भी जोड़ा।

अब, एक बार समय की अवधि की पहचान हो जाने के बाद बाइबल के धर्मविज्ञानी का काम ऐतिहासिक घटनाओं के उस तानेबाने पर ध्यान केंद्रित करना है जिसने उस अवधि के दौरान परमेश्वर और उसकी इच्छा को प्रकट किया। निस्संदेह, किसी भी ऐतिहासिक अवधि में घटित सभी घटनाएँ आपस में जुड़ी हुई थीं। लेकिन पवित्रशास्त्र कुछ घटनाओं को दूसरी घटनाओं की तुलना में अधिक प्रकट करते हैं। इसलिए, बाइबल के धर्मविज्ञानी आम तौर पर बाइबल के इतिहास की इन अधिक रचनात्मक या केंद्रीय घटनाओं पर ध्यान देते हैं।

उदाहरण के लिए, जब बाइबल के धर्मविज्ञानी पुराने नियम के इतिहास के उस हिस्से पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसे अक्सर "प्रतिज्ञा की अवधि" — इस्राएल के कुलपतियों, अब्राहम, इसहाक और याकूब का समय — के रूप में जाना जाता है, तो वे अक्सर देखते हैं कि परमेश्वर ने इस समय में स्वयं को मुख्य रूप से प्रत्यक्ष कथन, दर्शनों और स्वप्नों के द्वारा प्रकट किया। वे इस बात पर भी ध्यान देते हैं कि जातिय केंद्र अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशजों तक सीमित था। वे देखते हैं कि कुलपतियों ने कई वेदियों पर आराधना की। उन्होंने कुलपतियों को दी गई अनेक वंशजों की प्रतिज्ञा का वर्णन किया। और उन्होंने पूर्वजों को देश देने की प्रतिज्ञा के महत्व पर ध्यान दिया। इस प्रकार के अवलोकन कुलपतियों की अवधि को समग्र रूप से दर्शाने का प्रयास करते हैं, और उन रचनात्मक घटनाओं की पहचान करते हैं जिन्होंने उस समय सीमा में प्रमुख भूमिकाएँ निभाईं।

या, जब बाइबल के धर्मविज्ञानी "व्यवस्था की अवधि" — मूसा का समय जिसने निर्गमन के द्वारा इस्राएल की अगुवाई की और उन्हें प्रतिज्ञा के देश पर विजय की ओर लेकर गया — पर ध्यान केंद्रित करना चुनते हैं, तो वे अक्सर इस बात पर ध्यान देते हैं कि परमेश्वर ने मुख्य रूप से मूसा की व्यवस्था के द्वारा स्वयं को कैसे प्रकट किया। वे यह भी देखते हैं कि कैसे इस्राएल पर किया गया संकीर्ण जातिय केंद्र एक राष्ट्रीय केंद्र में बदल गया। वे वर्णन करते हैं कि कैसे मिलापवाले तंबू का निर्माण किया गया और वहाँ आराधना को केंद्रीकृत किया गया। उन्होंने ध्यान दिया कि इस्राएल बड़ी संख्या में बढ़ गया था। और वे दिखाते हैं कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार की घटनाएँ समग्र रूप से मूसा की अवधि के चरित्र को दर्शाती हैं और बाइबल के इतिहास में हमें इस समय की एक तस्वीर प्रदान करती हैं।

> धर्मविज्ञानी अक्सर परमेश्वर की योजना को विभिन्न युगों और कालों में विभाजित करने की बात करते हैं... नए नियम में हमारे पास कई उदाहरण हैं कि कैसे नया

> नियम पुराने नियम को विभाजित करता है। आप मत्ती में दी गई वंशावली के बारे में सोचें। यह अब्राहम से शुरू होती है, दाऊद से होते हुए आगे बढ़ती है। यह पुराने नियम के इतिहास को अब्राहम से दाऊद, दाऊद से निर्वासन, निर्वासन से मसीह तक आगे बढ़ाता है। यह वह तरीका है जिससे बाइबल पुराने नियम के इतिहास को विभाजित करती है... नए नियम इसे अन्य तरीकों में भी विभाजित करता है। आप रोमियों 5; 1 कुरिन्थियों 15 में पौलुस के बारे में सोचें। आप आदम और मसीह के बारे में बात कर सकते हैं; व्यवस्था से पहले, व्यवस्था के बाद। इस प्रकार, नया नियम ऐसा करने के कई तरीके दिखाता है।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेलम

समकालिक चित्र के परिणामों को सामने रखते हुए बाइबल के धर्मविज्ञानी आम तौर पर दूसरे चरण की ओर बढ़ते हैं, जिसे हम ऐतिहासिक खोज कह सकते हैं।

ऐतिहासिक खोज

शब्द "ऐतिहासिक" का सीधा सा अर्थ है "समय से होते हुए"। यह उन तरीकों को दर्शाता है जिनमें समय के साथ कुछ विकसित हुआ या बदला है। अतः एक ऐतिहासिक खोज परमेश्वर के कार्यों और वचनों को एक अवधि से दूसरी अवधि तक समय के द्वारा एक-दूसरे से जोड़ने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित करती है।

हम ऐतिहासिक खोज को स्थापित करने की प्रक्रिया का सारांश इस प्रकार दे सकते हैं : जब हम बाइबल के इतिहास की विभिन्न अवधियों में होनेवाली रचनात्मक घटनाओं की एक-दूसरे से तुलना करते हैं, तो हम पहचानते हैं कि एक अवधि की घटनाओं और दूसरी अवधि की घटनाओं के बीच संरेखण या समानताएँ पाई जाती हैं। बाइबल के धर्मविज्ञानी इन संबंधों पर ध्यान देते हैं और समझाते हैं कि कैसे वे पुराने नियम के विश्वास में विकास को दर्शाते हैं।

पुराने नियम की व्याख्या करने की सबसे कठिन लेकिन बड़ी विशेषताओं में से एक यह सच्चाई है कि यह इतिहास की केवल एक अवधि का वर्णन नहीं करती। यह हजारों वर्षों की घटनाओं पर ध्यान देती है। जब हम सीखते हैं कि इतिहास के इस लंबे समय में परमेश्वर ने क्या किया और क्या कहा, तो यह एक सामान्य पाठक के लिए भी स्पष्ट है कि परमेश्वर के प्रकाशन कई प्रकार के धर्मवैज्ञानिक विकास को प्रस्तुत करते हैं।

आदम की वाचा के समय परमेश्वर ने जो प्रकट किया वह नूह की वाचा के समय में केवल दोहराया नहीं गया था। अब्राहम की वाचा की अवधि में परमेश्वर के प्रकाशनों ने केवल वही नहीं दोहराया जो पहले प्रकट किया गया था। और यही बात मूसा की वाचा और दाऊद की वाचा के समय पर भी लागू हुई। और नई वाचा के दौरान ईश्वरीय प्रकाशन दाऊद की वाचा से भी आगे बढ़ा।

लेकिन इन युगों के दौरान ईश्वरीय प्रकाशनों ने एक-दूसरे का खंडन नहीं किया। बाद की अवधियों में हुए प्रकाशनों ने पहले की अवधियों को शामिल किया और उनके ऊपर निर्माण किया। समय की विभिन्न अवधियों के बीच के अंतर परिपक्वता या जैविक विकास को दर्शाते हैं। पुराने नियम का विश्वास वैसे विकसित हुआ जैसे एक बीज एक पौधा बनता है, फिर एक छोटा पेड़ और फिर एक बड़ा वृक्ष बनता है। पुराने नियम के इतिहास में इन विकासों का वर्णन करना वह प्रक्रिया है जिसे हम "ऐतिहासिक खोज" कहते हैं। अपने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए, आइए हम केवल उस एक पहलू पर विचार करें जिस पर अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा में बल दिया गया है। हम अब्राहम को कनान का देश देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा को देखेंगे। उत्पत्ति 15:18-19 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> इसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, "मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नद तक जितना देश है... मैं ने तेरे वंश को दिया है" (उत्पत्ति 15:18-19)।

जैसा कि यह अनुच्छेद दर्शाता है, परमेश्वर ने अब्राहम से उसके वंशजों के लिए कनान देश देने की प्रतिज्ञा की थी। यह घटना कुलपतियों की अवधि के किसी भी सुगठित समकालिक चित्र के केंद्र में है।

लेकिन पुराने नियम के इतिहास में परमेश्वर द्वारा अब्राहम से की गई इस प्रतिज्ञा के महत्व को समझने के लिए, हमें समय की अन्य अवधियों की खोज भी करनी चाहिए। हमें यह पूछने की ज़रूरत है, "पहले की कौन सी घटनाएँ कनान के देश की इस प्रतिज्ञा की पृष्ठभूमि की रचना करती हैं?" और "बाद की घटनाएँ इस प्रतिज्ञा के महत्व को प्रकट करने में कैसे कार्य करती हैं?" सबसे पहले बाइबल के इतिहास की सबसे आरंभिक अवधि अर्थात् अति प्राचीन इतिहास पर विचार करें, जिसमें आदम और नूह के साथ परमेश्वर की वाचाएँ शामिल हैं। जैसा कि हमने एक अन्य अध्याय में देखा, आदम के समय में परमेश्वर ने सबसे पहले मनुष्यजाति को अपने राजकीय याजकों के रूप में स्थापित किया और उन्हें पूरी पृथ्वी पर अधिकार रखने का निर्देश दिया। जैसा कि हम उत्पत्ति 1:28 में पढ़ते हैं :

> और उनसे कहा, "फूलो–फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो" (उत्पत्ति 1:28)।

इस समय तक मनुष्यजाति ने पाप नहीं किया था, और पृथ्वी पर अधिकार रखना काफी आसान होता। लेकिन पाप ने मनुष्यजाति के प्रयासों को कठिन और पीड़ादायक बनाकर अधिकार रखने की प्रक्रिया को जटिल बना दिया। जैसा कि परमेश्वर ने स्वयं उत्पत्ति 3:17-19 में आदम से कहा था :

> भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; और वह तेरे लिये काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा; और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा (उत्पत्ति 3:17-19)।

फिर भी, पाप में पतन के बाद भी, परमेश्वर ने मनुष्यों से अपेक्षा की कि वे पृथ्वी पर अधिकार रखने के लिए प्रयास करते रहें। मनुष्यजाति की दुष्टता इतनी अधिक बढ़ जाने के बाद जब परमेश्वर ने नूह के समय में संसार को नष्ट कर दिया, तब भी परमेश्वर ने अपने राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने की अपनी आज्ञा को बनाए रखा। जैसा कि परमेश्वर ने जल-प्रलय के तुरंत बाद, उत्पत्ति 9:1 में नूह को निर्देश दिया :

> फूलो–फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ (उत्पत्ति 9:1)।

इस पृष्ठभूमि को जानने से हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि अब्राहम को देश देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा मनुष्यजाति के अधिकार रखने की बुलाहट को पूरा करने की दिशा में एक कदम थी। अति प्राचीनकाल में, परमेश्वर ने अपने स्वरूप को बुलाया कि वे व्यर्थता और पाप से भरे संसार पर अधिकार करके पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का निर्माण करें। यह अधिकार तब और अधिक प्रकट हुआ जब परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को कनान के प्रतिज्ञा किए गए देश पर अधिकार करने के लिए बुलाया। अब, कुलपतियों की अवधि में पूर्णता का यह चरण अपने आप में कोई अंत नहीं था। कुलपतियों को देश देने की प्रतिज्ञा भविष्य में और भी बड़ी पूर्णता की ओर एक कदम था। जैसा कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 22:18 में अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी :

> पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी (उत्पत्ति 22:18)।

यह पद हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को पैर रखने के स्थान के रूप में प्रतिज्ञा का देश दिया था। यह एक आरंभिक बिंदु होना था जहाँ से उन्हें पृथ्वी के सभी कुलों को संपूर्ण पृथ्वी पर छुटकारे और परमेश्वर को सम्मान देनेवाले अधिकार की आशीषों की ओर ले जाना था - — जैसा कि परमेश्वर ने मूल रूप से मनुष्यजाति के लिए निर्धारित किया था।

इस कारण, मनुष्यजाति के अधिकार की हमारी ऐतिहासिक खोज मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा की अवधि की ओर आगे बढ़नी चाहिए। इस अवधि में, परमेश्वर ने इस्राएल को उनकी मातृभूमि के रूप में प्रतिज्ञा के देश में स्थापित किया, और यहोशू द्वारा प्राप्त विजय में इस्राएल को वह देश देकर कुलपतियों से की गई प्रतिज्ञा को आगे बढ़ाया। जैसा कि परमेश्वर ने यहोशू 1:6 में यहोशू से कहा :

> इसलिये हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा (यहोशू 1:6)।

मनुष्यजाति द्वारा अधिकार रखने की मूल बुलाहट को, और अब्राहम को देश देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा को तब आगे बढ़ाया गया जब इस्राएल ने प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार कर लिया।

निर्वासन और विजय के समय में देश पर इस्राएल का आरंभिक अधिकार दाऊद की वाचा की अवधि में और अधिक पूरा हुआ। यह वह समय था जब इस्राएल ने शत्रुओं के विरुद्ध उस देश को सुरक्षित किया और उसे एक महान साम्राज्य के रूप में बढ़ाया। दाऊद के घराने द्वारा प्रदान की गई देश की सुरक्षा उस देश पर पाई आरंभिक विजय को मजबूत करने और विस्तृत करने की दिशा में एक और कदम था। लेकिन इस अवधि की शुरुआत में राजकीय वास्तविकताओं ने भविष्य के एक दिन की ओर भी देखा, एक ऐसे दिन की ओर जब दाऊद के घराने का धर्मी शासन पूरी पृथ्वी पर अधिकार कर लेगा। दाऊद के घराने में यह आशा भजन 72:8-17 में व्यक्त की गई है :

> वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा...सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे, जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे... और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी (भजन 72:8-17)।

दाऊद की वाचा की अवधि के दौरान आशा यह थी कि दाऊद का घराना यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य साबित होगा और राज्य का विस्तार होगा तथा छुटकारा और पूरी पृथ्वी पर विश्वासयोग्य लोगों का अधिकार लेकर आएगा।

दुःख की बात है कि दाऊद के घराने से यह बड़ी आशा निर्वासन और असफल पुनर्स्थापना के दौरान टूट गई। और अधिक पूर्णता का समय होने के बजाय, यह वास्तव में असफलता का समय था। यह अवधि पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों के अधिकार रखने के संबंध में एक भयानक रुकावट बन गई। परमेश्वर का दंड उसके लोगों के विरुद्ध आया, और उसने उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों को उनके देश से से बाहर निकालकर निर्वासन में भेज दिया।

और इससे भी बढ़कर, परमेश्वर अपनी दया में बहुत से इस्राएलियों को उस देश में वापस लेकर आया। उसने दाऊद के वंशज जरुब्बाबेल को अपने लोगों का राज्यपाल नियुक्त किया और उसे पृथ्वी की जातियों पर बड़ी विजय प्रदान की। जैसे कि हम हाग्गै 2:7-9 में पढ़ते हैं :

> मैं सारी जातियों को कम्पकपाऊँगा, और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएँ आएँगी; और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूँगा... इस भवन की

> पिछली महिमा इसकी पहली महिमा से बड़ी होगी... और इस स्थान में मैं शान्ति दूँगा (हाग्गै 2:7-9)।

यदि इस्राएल विश्वासयोग्य रहता, तो दाऊद के घराने के अधिकार के द्वारा छुटकारे की आशीष पूरे संसार में फैलना शुरू हो गई होती। परन्तु अपने देश लौटनेवाले इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध बार-बार विद्रोह किया, जिससे आशीष देने और बढ़ाने की प्रतिज्ञाएँ कभी पूरी नहीं हुईं। वास्तव में, पुनर्स्थापना एक बड़ी विफलता बन गई।

इस बिंदु पर बाइबल के मसीही धर्मविज्ञानी बाइबल-आधारित इतिहास के अंतिम चरण — नई वाचा में इतिहास के चरम — की ओर मुड़ते हैं। नया नियम विश्वासियों को आश्वस्त करता है कि परमेश्वर ने निर्वासन और असफल पुनर्स्थापना की विफलताओं को पलटने और पृथ्वी पर छुटकारा प्राप्त मनुष्यजाति के अधिकार की पूर्णता को लाने के लिए मसीह में कार्य किया है। यीशु निर्वासन के शाप को पलटने, पाप से आजादी और छुटकारा लाने के लिए आया, ताकि जो लोग उसका अनुसरण करते हैं वे उसके साथ पृथ्वी पर शासन कर सकें। जैसा कि यीशु ने स्वयं प्रकाशितवाक्य 2:26 में कहा :

> जो जय पाए और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति जाति के लोगों पर अधिकार दूँगा (प्रकाशितवाक्य 2:26)।

> हमें कलीसिया के इतिहास और इतिहास में पीछे जाकर यह समझने की जरूरत है कि परमेश्वर कैसे काम करता रहा है, यहाँ तक कि जब परमेश्वर ने 2000 ईसा पूर्व में अब्राहम को चुना, तब ही परमेश्वर ने संसार को आशीष देने का निश्चय कर लिया था। परमेश्वर एक मनुष्य को चुनने के द्वारा पूरे संसार को आशीष देगा। इसलिए, उसने अब्राहम के साथ काम करके, अब्राहम के साथ एक संबंध बनाकर और उसे स्थापित करके, उसे यह दिखाकर कि पूरी तरह से अयोग्य होने पर भी अनुग्रह प्राप्त करना क्या है, और फिर वाचा के संबंध में उसके द्वारा, उसके परिवार के द्वारा कार्य करके ऐसा किया... ताकि, जब मसीह आएगा — यह केवल यहूदियों के लिए नहीं है, यह केवल अब्राहम और उसकी संतान के लिए नहीं है, बल्कि पूरी पृथ्वी के समझने के लिए है; यह सारी पृथ्वी का परमेश्वर है — तो वह इसी तरह लोगों से संबंध रखेगा। और जब यीशु आया, तो उसने उन सब आशाओं और प्रतिज्ञाओं को पूरा किया, और ऐसे पूरा किया कि नया नियम भी कहता है कि अब्राहम उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था, और अब्राहम आज भी उस की पूर्णता की प्रतीक्षा कर रहा है, जब वह जी उठेगा और उसके साथ सारी पृथ्वी के सब विश्वासी भी जी उठेंगे।
>
> — डॉ. क्ले क्वार्टरमैन

यह संक्षिप्त उदाहरण उन कई तरीकों में से एक को दर्शाता है जिनसे इतिहास के बाइबल-आधारित विवरण की ऐतिहासिक खोजें हमें पुराने नियम में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। पुराने नियम से होकर इतिहास को देखना, जो यह बताता है, पुराने नियम के कैनन के महत्व को समझने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।

अब जबकि हमने यह देख लिया है कि जब हम पुराने नियम के कैनन को एक दर्पण और एक खिड़की के रूप में देखते हैं तो हम अपने राजा के वचन को कैसे प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए हमें अपना ध्यान पुराने नियम के कैनन को एक तस्वीर के रूप में — साहित्यिक चित्रों के संग्रह के रूप में — देखने पर केंद्रित करना चाहिए।

कैनन, एक तस्वीर के रूप में

पुराने नियम से परिचित हर कोई यह जानता है कि इसमें विषयों या शीर्षकों की सूची नहीं पाई जाती। न ही यह ऐतिहासिक घटनाओं का सीधा-सीधा विवरण है। अब जैसा कि हम इस अध्याय में पहले ही कह चुके हैं, पुराना नियम हमें सब प्रकार के विषयों में आधिकारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, और यह इतिहास का सच्चा विवरण प्रदान करता है। लेकिन सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण, पुराने नियम का कैनन साहित्यिक कृतियों का एक संग्रह, पुस्तकों का एक पुस्तकालय है। जैसा कि हम देखने वाले हैं, बाइबल के लेखकों ने बाइबल की इन पुस्तकों में से प्रत्येक की विषय-वस्तु और संरचना को लिखा ताकि वे प्राचीन इस्राएलियों को विशेष तरीकों से परमेश्वर की वाचा की नीतियों के प्रति समर्पित होने के द्वारा परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने की शिक्षा दे सकें। और इस कारण, युगों-युगों से परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों ने पुराने नियम की पुस्तकों को तस्वीरों या साहित्यिक चित्रों के रूप में देखने के द्वारा उनके कई महत्वपूर्ण विचारों को प्राप्त किया है।

कई रूपों में, पुराने नियम के कैनन को इस तरह से देखना एक कला संग्रहालय में जाने जैसा है। यदि आप कभी किसी संग्रहालय या दृश्य कला की प्रदर्शनी में गए हैं, तो आप जानते हैं कि किसी विशेषज्ञ या साथी दर्शक को कलाकारों द्वारा इस्तेमाल किए गए प्रकाश, रंग, रेखा, रूप और बनावट जैसी बातों की ओर संकेत करते हुए सुनना असामान्य नहीं है। और वे अक्सर इस बारे में बात करते हैं कि ये कलात्मक बातें कैसे प्रकट करती हैं कि कलाकार क्या कहना चाह रहा था। क्या कलाकार का उद्देश्य धार्मिक था? क्या यह राजनीतिक था? क्या कलाकार किसी आदर्श की बड़ाई कर रहा था? किसी बुराई या अन्याय को प्रकट कर रहा था? यह सूची बहुत लंबी है।

इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, कला समीक्षक अक्सर चित्रों के पटल पर दिखाई देनेवाली बातों से कहीं अधिक बातों पर ध्यान देते हैं। वे पूछते हैं, "कलाकार कौन थे?" "कलाकारों के अनुभवों ने उनकी कलाकृति को कैसे प्रभावित किया?" और वे यह भी पूछते हैं, "कलाकृति किसके लिए बनाई गई थी?" "कलाकारों ने दूसरों की धारणाओं, कार्यों और भावनाओं को प्रभावित करने के लिए अपनी कलाकृति को कैसे तैयार किया?"

लगभग इसी तरह, हम पुराने नियम की पुस्तकों को तस्वीरों के रूप में देखने की बात कर सकते हैं। हम न केवल पुराने नियम की पुस्तकों के पृष्ठों पर लिखी बातों पर ध्यान देते हैं, बल्कि हम पुराने नियम के लेखकों के जीवन और उनके मूल पाठकों की जरूरतों पर दिए उनके ध्यान पर भी विचार करते हैं। हम इस रणनीति को "साहित्यिक विश्लेषण" कहते हैं क्योंकि यह इस बात पर ध्यान देता है कि बाइबल के लेखकों ने किस प्रकार अपनी पुस्तकों को परमेश्वर के उन लोगों की धारणाओं, कार्यों और भावनाओं को प्रभावित करने के लिए रचा जिनके लिए उन्होंने उन्हें लिखा था।

यह पता लगाने के लिए कि साहित्यिक विश्लेषण के द्वारा पुराने नियम की पुस्तकों को तस्वीरों के रूप में कैसे देखा जा सकता है, हम उसी दृष्टिकोण को अपनाएँगे जो हमने पहले अपनाया है। सबसे पहले, हम पुराने नियम को इस तरह से अपनाने के आधार या औचित्य के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम इस रणनीति के केंद्र पर ध्यान देंगे। आइए सबसे पहले साहित्यिक विश्लेषण के आधार पर दृष्टि डालें।

आधार

साहित्यिक विश्लेषण के आधार को देखने के कई तरीके हैं, लेकिन अपने उद्देश्यों के लिए हम स्वयं को एक बार फिर दो कारकों तक ही सीमित रखेंगे : पहला, स्वयं पवित्रशास्त्र का चरित्र; और दूसरा, बाइबल लेखकों और आधिकारिक चरित्रों के उदाहरण। आइए पहले विचार करें कि पुराने नियम का चरित्र किस प्रकार पुराने नियम की पुस्तकों को साहित्यिक चित्रों के रूप में देखने के महत्व को दर्शाता है।

पवित्रशास्त्र का चरित्र

साहित्यिक विश्लेषण पुराने नियम के कैनन की कम से कम तीन स्पष्ट विशेषताओं पर आधारित है। सबसे पहले, कैनन किताबों या साहित्यिक इकाइयों में हमारे पास आता है। पुराना नियम मोटे तौर पर स्वतंत्र चर्मपत्रों या पुस्तकों का एक संग्रह है जिन्हें 1000 वर्षों की अवधि में प्राचीन इस्राएल की जरूरतों को संबोधित करने के लिए लिखा गया था। आधुनिक बाइबल की विषय-सूची को देखने से पता चलता है कि इसमें 39 पुस्तकें हैं। बाइबल के अधिकांश छात्र पुराने नियम की पुस्तकों की पारंपरिक सूची से परिचित हैं, लेकिन हमें इन साहित्यिक इकाइयों के बारे में कई विशेषताओं का उल्लेख करना चाहिए।

सबसे पहले, हमें पुराने नियम की पुस्तकों के नामों को बहुत अधिक महत्व नहीं देना चाहिए क्योंकि वे मूल नाम नहीं थे। कुछ शीर्षक पुरानी यहूदी परंपराओं से आते हैं, कुछ सेप्टुआजेंट — पुराने नियम का प्राचीन यूनानी अनुवाद — से आते हैं, और हमारी आधुनिक बाइबल में कुछ शीर्षक बहुत बाद की मसीही परंपराओं से आते हैं।

हमें यह भी उल्लेख करना चाहिए कि 1 और 2 शमूएल, 1 और 2 राजाओं और 1 और 2 इतिहास मूल रूप से केवल तीन पुस्तकें थीं : शमूएल, राजाओं और इतिहास की पुस्तकें। इसी तरह, कई व्याख्याकारों ने तर्क दिया है कि एज्रा और नहेम्याह भी मूल रूप से एक ही पुस्तक थीं। जब हम साहित्यिक विश्लेषण की दृष्टि से पुराने नियम को पढ़ते हैं तो हम कैनन की इकाइयों को वैसे ध्यान में रखना चाहते हैं जैसे वे मूल रूप से दी गई थीं।

और जब हम पुराने नियम के कैनन के बारे में सोचते हैं, तो यह भी महत्वपूर्ण है कि हम इसकी पुस्तकों के क्रम या व्यवस्था पर बहुत अधिक निर्भर न रहें। पुराने नियम की पुस्तकों का क्रम पूरे इतिहास में अलग-अलग रहा है।

पहली सदी में जोसेफस के समय से ही, यहूदी समुदायों ने पुराने नियम को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया है : व्यवस्था, या इब्रानी में तोराह (תּוֹרָה); भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें, या इब्रानी में नबी'इम (נְבִיאִים); और ऐतिहासिक विवरण, या इब्रानी में केतुविम (כְּתוּבִים)। इसी कारण, सदियों से यहूदी समुदायों ने इब्रानी बाइबल को तनाक कहा है — मूसा की व्यवस्था या पेन्टाटचूक के लिए "त," भविष्यवक्ताओं के लिए "न", और ऐतिहासिक विवरणों के लिए "क"। नया नियम इस परंपरा को अपने तरीकों से दर्शाता है, और कई बार पूरे पुराने नियम को "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता" या "व्यवस्था, भविष्यद्वक्ता और भजनों" — ऐतिहासिक विवरणों की पहली पुस्तक — के रूप में दर्शाता है।

लेकिन कुल मिलाकर, मसीही कलीसिया ने यूनानी पुराने नियम, सेप्टुआजेंट के अनुसार पुराने नियम के कैनन की पुस्तकों को व्यवस्थित किया है। तनाक के क्रम का अनुसरण करने के बजाय, हम आम तौर पर व्यवस्था — या पेन्टाटचूक; ऐतिहासिक पुस्तकों — यहोशू से लेकर एस्तेर; काव्य पुस्तकों — अय्यूब से लेकर श्रेष्ठगीत; और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों — यशायाह से लेकर मलाकी की बात करते हैं ।

पुराने नियम के कैनन की पुस्तकों के क्रम में ये भिन्नताएँ पुराने नियम के साहित्यिक दृष्टिकोण के विषय में बहुत महत्वपूर्ण बातों को प्रकट करती हैं। पुराने नियम की पुस्तकें मूल रूप से स्वतंत्र साहित्यिक कृतियाँ थीं। इसलिए, जब हम पुराने नियम के कैनन को एक तस्वीर के रूप में देखते हैं, तो हमें सबसे पहले, प्रत्येक पुस्तक को एक इकाई के रूप में समझने पर ध्यान देना चाहिए। हम उत्पत्ति की पुस्तक को उसकी विशिष्ट रचना और धर्मवैज्ञानिक विषयों के साथ उत्पत्ति की पुस्तक के रूप में देखते हैं; निर्गमन की पुस्तक को निर्गमन की पुस्तक के रूप में, इत्यादि।

> अधिकांश रूप में बाइबल में मूल साहित्यिक इकाई बाइबल की एक पुस्तक है — आपको कुछ अपवाद मिल सकते हैं जैसे भजन संहिता की पुस्तक। लेखक मूलभूत रूप से योजना बनाते हैं और पुस्तकें लिखते हैं। और इसका अर्थ है कि वह संदर्भ केवल उन अनुच्छेदों तक ही सीमित नहीं है जो उसके तुरंत पहले और

> बाद में आते हैं, जिनमें वह अवश्य पाया जाता है, और यह बहुत महत्वपूर्ण है, सचमुच बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन वास्तव में, इस पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि एक अनुच्छेद कैसे कार्य करता है, यह उस संपूर्ण पुस्तक में क्या भूमिका निभाता है जिसका यह एक भाग है।
>
> — डॉ. डेविड आर. बौर

पुराने नियम की दूसरी विशेषता जो साहित्यिक विश्लेषण के महत्व को दर्शाती है, वह यह सच्चाई है कि पुराने नियम की पुस्तकें प्रभावशाली साहित्यिक गुणों को प्रकट करती हैं। सामान्य अनुभव से, हम सब जानते हैं कि कुछ लेखनों में दूसरों की तुलना में उनकी साहित्यिक कलात्मकता पर अधिक ध्यान देने की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए, किसी कविता की चमक के साथ सामान खरीदने की सूची को देखना बड़ा अजीब होगा। एक त्वरित पत्र को आम तौर पर एक बड़े उपन्यास की तरह जटिल रूप से तैयार नहीं किया जाता। जब हम साधारण लेखन को देखते हैं, तो हमें आम तौर पर उनके साहित्यिक गुणों पर अधिक ध्यान देने की जरूरत नहीं होती। लेकिन जब हम कोई जटिल उपन्यास या कविता पढ़ते हैं, और यदि हम गहन विचारों को प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें लेखक की साहित्यिक तकनीकों पर ध्यान देना होगा।

जैसा कि पाया जाता है, पुरातत्वविदों ने बाइबल के समय में अन्य संस्कृतियों से लिखित सामग्रियों की एक बड़ी श्रृंखला की खोज की है। हमारे पास पत्र, सूचियाँ, रसीदें आदि हैं जो बहुत अधिक साहित्यिक जटिलता प्रकट नहीं करते। लेकिन हमारे पास प्राचीन मध्य पूर्व की अद्भुत जटिल साहित्यिक कृतियाँ भी हैं। बाइबल के समय की बड़ी संस्कृतियों में बड़े मिथक और पौराणिक कथाएँ, जटिल कानूनी प्रलेख और जटिल रीतिपूर्ण लेखन थे। ये ऐसी साहित्यिक रचनाएँ थीं जिन्हें बड़ी सावधानी से तैयार किया गया था।

निस्संदेह, पुराने नियम की पुस्तकें सबसे विस्तृत साहित्यिक कृतियों में से हैं जिनके बारे में हम प्राचीन संसार से अवगत हैं। अधिकांश मानकों के अनुसार, पुराने नियम की पुस्तकें प्राचीन संसार की महानतम संस्कृतियों के महानतम साहित्य की कलात्मकता के समतुल्य हैं या उससे बढ़कर हैं। पुराने नियम की पुस्तकों के इन जटिल साहित्यिक गुणों को समझने से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि कैसे पुराने नियम के लेखकों ने अपने पाठकों के जीवनों को प्रभावित करने की कोशिश की।

एक तीसरा कारण कि क्यों हमें पुराने नियम का साहित्यिक विश्लेषण करना चाहिए इसकी साहित्यिक विविधता में पाया जाता है। पुराने नियम का कैनन एक समतल भूभाग नहीं है जिसमें हर पृष्ठ पर एक ही प्रकार के लेखन हों। इसके बजाय, यह पहाड़ों, नदियों, झीलों, उपजाऊ मैदानों, रेगिस्तानों और महासागरों से भरे विविध भूभाग जैसा है। दूसरे शब्दों में, पुराने नियम की पुस्तकें विभिन्न शैलियों या प्रकारों के साहित्य को प्रस्तुत करती हैं।

पुराने नियम की कुछ पुस्तकें मुख्य रूप से विवरणात्मक हैं, जैसे उत्पत्ति, यहोशू, न्यायियों और रूत। इन पुस्तकों में संक्षिप्त वंशावली, सूचियाँ, कविताएँ, साथ ही आराधना-संबंधी और सामाजिक निर्देश भी शामिल हैं। पुराने नियम के कैनन की अन्य पुस्तकें मुख्य रूप से काव्य हैं, जैसे भजन संहिता, अय्यूब और भविष्यवक्ताओं की कई पुस्तकें। फिर भी अन्य पुस्तकें अत्यधिक शैलीबद्ध गद्य हैं, जैसे सभोपदेशक और मलाकी की पुस्तकें। इसके अलावा, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में व्याख्यान पाए जाते हैं।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम की पुस्तकों को विभिन्न शैलियों में लिखा गया था, क्योंकि प्रत्येक शैली के पाठकों को प्रभावित करने के अपने तरीके थे। व्यवस्था को व्यवस्था के रूप में पढ़ा जाना चाहिए; व्याख्यानों को व्याख्यानों के रूप में, कहानियों को कहानियों के रूप में, कविताओं को कविताओं के रूप में, नीतिवचनों को नीतिवचनों के रूप में, दर्शनों को दर्शनों के रूप में, भविष्यवाणियों को भविष्यवाणियों के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। यह प्रकट करने के लिए कि पुराने नियम की पुस्तकों को मूल रूप से परमेश्वर के लोगों के जीवनों को प्रभावित करने के लिए कैसे रचा गया था,

हमें उन शैलियों को ध्यान में रखना चाहिए जो पुराने नियम की प्रत्येक पुस्तक की विशेषताएँ हैं। यह एक और तरीका है जिसमें पवित्रशास्त्र का चरित्र ही साहित्यिक विश्लेषण के महत्व को प्रकट करता है।

> कोई व्यक्ति बाइबल के जिस अनुच्छेद का अध्ययन कर रहा है, उसकी शैली को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें सही रीति से व्याख्या करने में मदद करता है। यह हमें वचन के लेख से अच्छे प्रश्न पूछने में मदद करता है। शैलियाँ — मोटे तौर पर कविता, ऐतिहासिक विवरण, व्यवस्था के खंड; बड़ी श्रेणी की ये शैलियाँ हमें यह समझने में मदद करती हैं कि हमें क्या आशा करनी चाहिए। यह हमें वचन के लेख से प्रश्न पूछने में मदद करता है। यदि यह काव्य का कोई लेख है तो हम उससे विवरणात्मक लेख से अलग प्रश्न पूछेंगे। कविताएँ अक्सर इस बात का विस्तार से वर्णन करने का प्रयास नहीं करतीं कि कोई ऐतिहासिक घटना कैसे घटी। वे अक्सर अधिक आलंकारिक भाषा में वर्णन करती हैं; वे रूपकों का उपयोग करती हैं। अतः आप इन विभिन्न प्रकार की शैलियों की अलग-अलग तरीकों से व्याख्या करते हैं।
>
> — डॉ. जिम जॉर्डन

पवित्रशास्त्र के चरित्र के अलावा, साहित्यिक विश्लेषण बाइबल के उदाहरणों, बाइबल के लेखकों और आधिकारिक पात्रों के उदाहरणों पर भी आधारित है जिन्होंने पुराने नियम के कैनन को इस रीति से देखा था।

बाइबल के उदाहरण

हर बार जब बाइबल के लेखकों और पात्रों ने अपने पाठकों के प्रति लेखक के उद्देश्यों के प्रकाश में पुराने नियम को देखा, तो उन्होंने एक प्रकार के साहित्यिक विश्लेषण का प्रयोग किया। उदाहरण के लिए, यीशु ने व्यवस्थाविवरण 24:1 में तलाक के बारे में मूसा द्वारा लिखी बातों पर चर्चा करते हुए साहित्यिक विश्लेषण पर ध्यान दिया। मरकुस 10:4 में कुछ फरीसियों ने तलाक के बारे में यीशु के दृष्टिकोण को इन शब्दों के साथ चुनौती दी :

> मूसा ने त्याग–पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है (मरकुस 10:4)।

यीशु के समय में, कुछ फरीसियों ने व्यवस्थाविवरण 24:1 की व्याख्या इस शिक्षा के रूप में की थी कि एक पुरुष व्यावहारिक रूप से किसी भी कारण से एक स्त्री को तलाक दे सकता है, बस उसे त्याग-पत्र लिखकर देने की जरूरत है। लेकिन यीशु ने मूसा के उद्देश्यों और अपने श्रोताओं की स्थिति के प्रकाश में इस अनुच्छेद को पढ़ने के द्वारा इस झूठी व्याख्या को सुधारा। मरकुस 10:5 में यीशु ने कहा :

> तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी (मरकुस 10:5)।

यीशु ने बताया कि मूसा ने इस्राएलियों के कठोर हृदयों के कारण तलाक की अनुमति दी थी।

यहाँ हमारे उद्देश्यों के लिए, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने व्यवस्थाविवरण 24 के लेख को उसके ऐतिहासिक संदर्भ से बाहर नहीं निकाला। उसने इस अनुच्छेद को उसके प्रकाश में देखा कि वह लेखक के रूप में मूसा और उसके श्रोताओं के रूप में प्राचीन इस्राएलियों के बारे में क्या जानता था। फरीसी मूसा के कठोर हृदयों वाले पाठकों के प्रति मूसा के उद्देश्यों को समझने में विफल रहे थे। परंतु यीशु इन बातों का महत्व जानता था, और उसने सही निष्कर्ष निकाला कि मूसा का नियम वास्तव में उनकी पापमयता के कारण दी गई अनुमति थी, न कि कोई आदर्श।

साहित्यिक विश्लेषण का एक और उदाहरण गलातियों 4:22-24 में पाया जाता है। सुनिए पौलुस ने अब्राहम की पत्नी सारा और उसके पुत्र इसहाक, और सारा की दासी हाजिरा और उसके पुत्र इश्माएल की पुराने नियम की कहानियों के बारे में क्या लिखा :

> यह लिखा है कि अब्राहम के दो पुत्र हुए; एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से। परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा; और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। इन बातों में दृष्टान्त है : ये स्त्रियाँ मानो दो वाचाएँ हैं (गलातियों 4:22-24)।

पद 24 में पौलुस ने कहा कि सारा और इसहाक और हाजिरा और इश्माएल के साथ अब्राहम की बातचीत के उत्पत्ति के वृत्तांत की "व्याख्या रूपक के रूप में की जा सकती है" क्योंकि वे "दो वाचाओं" को प्रस्तुत करते हैं। दूसरे शब्दों में, पौलुस ने समझा कि सारा और हाजिरा के साथ अब्राहम की बातचीत का विवरण उत्पत्ति के मूल इस्राएली पाठकों के लिए एक विशेष उद्देश्य के साथ लिखा गया था।

उत्पत्ति के विवरण ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब्राहम के सामने परमेश्वर से संबंध रखने के दो मार्ग थे : एक ओर सारा और इसहाक का मार्ग, और दूसरी ओर हाजिरा और इश्माएल का मार्ग। एक ओर, अब्राहम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था जब वह सारा के द्वारा एक संतान की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहा। परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा पर निर्भर रहने का यह मार्ग कठिन था, लेकिन यह परमेश्वर की आशीष का मार्ग था। परंतु दूसरी ओर, अब्राहम परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य था जब उसने मिस्री दासी हाजिरा के द्वारा संतान उत्पन्न करने के लिए अपने स्वयं के प्रयासों पर भरोसा किया। अपने स्वयं के प्रयासों पर भरोसा करने के इस मार्ग के फलस्वरूप अब्राहम के विरुद्ध परमेश्वर का दंड आया।

जब मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में लिखा, तो वह अपने इस्राएली पाठकों के लिए अब्राहम के चुनावों के बड़े महत्व के बारे में अच्छी तरह से अवगत था। उसने इन कहानियों को उत्पत्ति की पुस्तक में बताया ताकि उसके इस्राएली पाठक अपने समय में जीवन के दो तरीकों से जुड़ सकें। एक ओर, मूसा ने सारा और हाजिरा के बारे में लिखा ताकि वह अपने मूल पाठकों को परमेश्वर पर इस बात में भरोसा करने के लिए प्रेरित कर सके कि वह प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार करने के लिए बहुत सी संतान देने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करे। परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा पर भरोसा करना कठिन था, लेकिन यह आशीष का मार्ग था। दूसरी ओर, मूसा ने इस्राएलियों से मिस्र की लालसा करके मानवीय प्रयासों पर भरोसा न करने की बुलाहट दी, जैसे अब्राहम मिस्री दासी हाजिरा की ओर मुड़ा था। पीछे मुड़ने पर इस्राएल के विरुद्ध परमेश्वर का दंड आएगा।

मूसा के मूल उद्देश्य पर यह बल देने के बाद, पौलुस ने इन कहानियों को गलातिया की कलीसियाओं की स्थिति पर लागू किया। गलातियों ने पौलुस के सच्चे सुसमाचार और यरूशलेम के प्रतिनिधियों से उनकी कलीसियाओं में आए झूठे सुसमाचार के बीच एक विकल्प का सामना किया। सच्चा सुसमाचार यह था कि छुटकारा मसीह में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने से आता है। झूठे सुसमाचार ने लोगों को छुटकारे के मार्ग के रूप में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने से दूर करके व्यवस्था का पालन करने के मानवीय प्रयास की ओर मोड़ दिया।

जैसा कि पौलुस ने गलातियों में कहा, जो लोग परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास के सच्चे सुसमाचार का अनुसरण करते हैं, वे सारा के बच्चे और प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी हैं। लेकिन जो लोग झूठे सुसमाचार का अनुसरण करते हैं वे हाजिरा की संतान हैं और उद्धार के दान के उत्तराधिकारी नहीं हैं। पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि परमेश्वर प्रतिज्ञाओं में विश्वास का सच्चा सुसमाचार आशीषों की ओर लेकर जाता है, और व्यवस्था के पालन का झूठा सुसमाचार केवल दंड की ओर लेकर जाता है। यह साहित्यिक विश्लेषण के प्रति पौलुस का ध्यान था — जिस तरह से मूसा ने अपने मूल पाठकों के लिए अपने

ऐतिहासिक विवरण को रचा था उस पर उसका ध्यान — जिसने उन्हें गलातिया की कलीसियाओं की परिस्थिति में उत्पत्ति की पुस्तक को इस रीति से लागू करने के लिए प्रेरित किया।

अब जब हमने पुराने नियम को एक तस्वीर के रूप में देखने के कुछ आधारों को देख लिया है, तो हमें अपना ध्यान साहित्यिक विश्लेषण के केंद्र की ओर लगाना चाहिए। पुराने नियम के कैनन के प्रति इस रणनीति के मुख्य विषय क्या हैं?

केंद्र

सुसमाचारिक मसीही अक्सर पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के उचित तरीके को "व्याकरणिक-ऐतिहासिक व्याख्या" के रूप में दर्शाते हैं। इससे हमारा अर्थ है कि व्याख्या या विवेचना को सबसे पहले, व्याकरण या बाइबल के लेख की रचना पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। लेकिन साथ ही व्याख्या ऐतिहासिक भी होनी चाहिए। और इससे हमारा अर्थ है कि किसी लेख के व्याकरण को अनुच्छेद के लेखक और मूल पाठकों की ऐतिहासिक परिस्थिति के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। किसी न किसी रूप में, ये कारण विषयगत और ऐतिहासिक विश्लेषण के प्रति उत्तरदायी दृष्टिकोणों में भी सामने आते हैं। लेकिन वे साहित्यिक विश्लेषण में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

साहित्यिक विश्लेषण का केंद्र देखने के लिए, हम तीन विषयों पर ध्यान देंगे। पहला, लेखक; दूसरा, मूल पाठक; और तीसरा, वह प्रलेख या लेख जो हमारे सामने है। आइए सबसे पहले पुराने नियम के कैनन के लेखकों पर विचार करने के महत्व पर विचार करें।

लेखक

मसीह के अनुयायी समझते हैं कि परमेश्वर ने संपूर्ण पुराने नियम के लेखन को प्रेरित किया और उसका निरीक्षण किया। लेकिन जैसा कि हमने इस श्रृंखला में पहले देखा, यह प्रेरणा जैविक थी। परमेश्वर ने कैनन की पुस्तकों की रचना करने के लिए अपने चुने हुए मानवीय लेखकों की पृष्ठभूमियों, विचारों, भावनाओं और उद्देश्यों का प्रयोग किया। इसलिए जब हम पुराने नियम को पढ़ते हैं तो हमें इस मानवीय पहलू के बारे में भी सोचना चाहिए। हम साहित्यिक विश्लेषण के इस पहलू को दो रूपों में देखेंगे। एक ओर, हमें कई खतरों के प्रति सचेत रहना चाहिए, और दूसरी ओर, हमें पुराने नियम के प्रति इस दृष्टिकोण के कई लाभों को भी देखना चाहिए।

सबसे पहले, जब हम पुराने नियम की पुस्तकों के मानवीय लेखकों के बारे में बहुत अधिक अनुमान लगाते हैं तो हमें गंभीर खतरों का सामना करना पड़ता है। अतीत में, कई व्याख्याकारों ने ऐसे रूपों में लेखकों पर ध्यान केंद्रित किया जिन्होंने उन्हें मनोवैज्ञानिक और सामाजकीय अनुमानों के जाल में उलझा दिया। उन्होंने आंशिक रूप से ऐसा लेखक की सटीक पहचान करने, उसके द्वारा सामना की गई विशिष्ट परिस्थितियों और उसकी धर्मवैज्ञानिक प्रेरणाओं के विवरण के बारे में बहुत अधिक अनुमान लगाने के द्वारा किया। इस प्रकार के विषय चाहे जितने भी महत्वपूर्ण हों, यदि हम उससे आगे बढ़ जाते हैं जो हम जानते हैं, तो हम अपनी व्याख्याओं को अनुमानों पर बहुत अधिक निर्भर बना सकते हैं। लेखक पर इस तरह के अत्यधिक बल को "इरादतन भ्रांति" कहा जा सकता है, जिसमें लेखक के इरादों के हमारे पुनर्निर्माण को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है।

लेकिन दूसरा, बाइबल लेखकों पर सावधानीपूर्वक और जिम्मेदारी के साथ ध्यान देने से हमें कई लाभ भी प्राप्त होते हैं। हम शायद उनके बारे में उतना नहीं जानते जितना हम जानना चाहते हैं, लेकिन फिर भी हम ऐसी बहुत सी बातें समझ सकते हैं जो हमें उनके लेखनों को समझने में सहायता करेंगी। हमें उनकी पहचान के बारे में, उनकी परिस्थितियों के बारे में और उनके बुनियादी धर्मवैज्ञानिक उद्देश्यों के बारे में अलग-अलग स्तर का सामान्य ज्ञान हो सकता है।

> बाइबल की किसी पुस्तक के लेखक के बारे में जानकारी हमारे लिए बहुत सहायक होती है जब हम इसका अर्थ समझने की कोशिश करते हैं। और ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा ने— कुछ इस तरह से जैसे केवल सर्वोच्च परमेश्वर ही कर सकता है — अपने त्रुटिरहित वचन को सौंपने के लिए मनुष्यों को उनके व्यक्तित्व में, उनके अनुभव की पृष्ठभूमि में प्रयोग किया। और अक्सर जब हम यह समझ लेते हैं कि कैसे उसने मानवीय लेखक को ऐसा व्यक्ति बनाया जिसके द्वारा वह अपने वचन को बोलता है, तो यह लेख के बारे में हमारी समझ को बढ़ाता है। मैं ... भजन 51 के बारे में सोचता हूँ जो एक उत्कृष्ट कृति है, दाऊद के पश्चाताप का भजन है और उसके उस पाप को पहचान लेने का भजन है जो उसने बतशेबा को लेकर अपने वफादार सैनिक उरिय्याह के विरुद्ध किया था, और यह उसका अंगीकरण भी है। वह संपूर्ण भजन जीवंत हो उठता है जब हम इसे एक ऐसे राजा के अंगीकरण के रूप में देखते हैं जो परमेश्वर के मन के अनुरूप व्यक्ति है, पर फिर भी जिसने गंभीर पाप किया है और परमेश्वर में क्षमा प्राप्त करता है।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

यह स्पष्ट करने के लिए कि हमारा क्या अर्थ है, आइए इस पर विचार करें कि हम पुराने नियम के दो महत्वपूर्ण लेखकों के बारे में क्या जानते हैं : 1 और 2 राजाओं के लेखक और 1 और 2 इतिहास के लेखक। हम ठीक से नहीं जानते कि ये लेखक कौन थे। हम उनके नाम नहीं जानते और न ही यह ठीक रीति से जानते हैं कि उन्होंने इन्हें कब लिखा। हम निश्चित रूप से उनकी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के बारे में ज्यादा नहीं जानते। इसलिए उनकी पुस्तकों की व्याख्या करते समय इस प्रकार के विचारों पर बहुत अधिक निर्भर रहने से हमारी व्याख्याओं को केवल अनुमान लगाने पर आधारित रहने का जोखिम उठाना पड़ता है।

परंतु साथ ही, हम पुराने नियम से ही इन दोनों लेखकों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि राजाओं की पुस्तक के लेखक ने बेबीलोन में इस्राएल के निर्वासन के दौरान उसे लिखा था। 2 राजाओं 25:27-30 के अंतिम दृश्य स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि लेखक ने 562 ईसा पूर्व के कुछ समय बाद उसे लिखा था, जब यहोयाकीन को बेबीलोन के बंदीगृह से आजाद किया गया था। लेकिन लेखक ने 538 ईसा पूर्व में कुस्रू की महत्वपूर्ण आज्ञा का कभी उल्लेख नहीं किया, जिसने यहूदियों को प्रतिज्ञा के देश में लौटने की अनुमति दी। इसलिए, राजाओं की पुस्तक लगभग निश्चित रूप से बेबीलोन की बंधुआई से इस्राएल की आजादी से पहले समाप्त हो गई थी।

इसके विपरीत, इतिहास की पुस्तक के लेखक — जिसे अक्सर "इतिहासकार" कहा जाता है — ने इस्राएल की बंधुआई से आजादी के बाद पुस्तक को लिखा था। हम यह जानते हैं क्योंकि, अन्य बातों के अलावा, 1 इतिहास 9 की वंशावली उन लोगों की सूची देती है जो अपने देश में लौट आए थे। यही नहीं, इतिहासकार ने 2 इतिहास 36:22, 23 में कुस्रू की आज्ञा के साथ अपनी पुस्तक को समाप्त किया।

हम यह भी जानते हैं कि ये दोनों लेखक इस्राएल के शिक्षित उच्च वर्ग के लोगों में से थे। दोनों लेखकों ने राजकीय इतिहास में से जानकारी का उल्लेख किया है जो केवल परमेश्वर के लोगों के अगुवों के लिए उपलब्ध रही होगी। और इतिहास के लेखक ने ऐसी भविष्यवाणियों के संग्रह का भी उल्लेख किया है जो बाइबल में शामिल नहीं हैं।

लेखकों के बारे में ऐसे कुछ तथ्यों को जानने भर से हमें उनके सामान्य धर्मवैज्ञानिक उद्देश्यों में अंतर को समझने में सहायता मिलती है। विभिन्न व्याख्याकारों ने सही निष्कर्ष निकाला है कि राजाओं की पुस्तक के लेखक ने अपने लोगों को निर्वासन में भेजने में परमेश्वर के न्याय पर बल दिया। उसने प्रतिज्ञा के देश में लौटने से पहले इस्राएलियों के मन फिराने की जरूरत पर भी ध्यान दिया।

इसके विपरीत, कई व्याख्याकारों ने सही निष्कर्ष निकाला है कि इतिहास के लेखक ने उन व्यावहारिक कदमों पर बल दिया जिनका पालन इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश में लौटने के बाद करने की जरूरत थी। और जब वे अपने राष्ट्र का पुनर्निर्माण करते हैं तो उसने आज्ञाकारिता के लिए उन्हें मिलनेवाली आशीष और अनाज्ञाकारिता के लिए मिलनेवाले शाप पर ध्यान दिया।

इन लेखकों की मान्यताओं और आशाओं के बारे में हम बहुत सी बातें कह सकते हैं, लेकिन मुख्य बात यह है : हमारे पास इसका विश्लेषण करने के लिए उनके बारे में पर्याप्त ज्ञान है कि अपने मूल पाठकों को प्रभावित करने के लिए उन्होंने किस प्रकार साहित्यिक तकनीकों का प्रयोग किया। और हमारे पास बाइबल के अन्य लेखकों के बारे में और भी अधिक जानकारी है, जिससे हमारी व्याख्याओं में लेखक पर नियमित रूप से ध्यान केंद्रित करना बहुत लाभदायक हो सकता है।

अब लेखक पर ध्यान केंद्रित करने के अतिरिक्त, पुराने नियम का जिम्मेदारीपूर्ण साहित्यिक विश्लेषण मूल पाठकों पर भी विचार करता है। पुराने नियम की पुस्तकें सबसे पहले किसने प्राप्त कीं? उनकी परिस्थिति कैसी थी? वे इस पवित्रशास्त्र से कैसे प्रभावित होने वाले थे?

पाठक

जिस प्रकार पुराने नियम की पुस्तकों के लेखकों पर विचार करने के खतरे और लाभ होते हैं, उसी प्रकार हमें मूल पाठकों पर ध्यान केंद्रित करने के खतरों और लाभों के बारे में भी जागरूक होने की जरूरत है। एक ओर, खतरे तब उत्पन्न होते हैं जब व्याख्याकार पाठकों के बारे में बहुत अधिक अनुमान लगाते हैं। वे अपनी सटीक पहचान की कल्पना करते हैं। वे पाठकों की परिस्थितियों के विशिष्ट विवरणों की फिर से रचना करते हैं। वे अपनी मनोवैज्ञानिक स्थितियों के बारे में अनुमान लगाते हैं। वे अपनी ताकतों और कमजोरियों की कल्पना करते हुए बहुत आगे निकल जाते हैं। पाठकों के विषय में इस प्रकार के अत्यधिक बल को "भावात्मक भ्रांति" कहा जा सकता है।

> भावात्मक भ्रांति वह है जहाँ हम पाठक की मानसिक-भावनात्मक स्थिति को लेते हैं और इसका प्रयोग किसी लेख के अन्य विचारों को बाहर करने के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, केवल इसलिए कि निर्वासित लोगों के लिए लिखा गया विलाप का एक भजन कुछ ऐसा है जिनके साथ हम उसे जोड़ सकते हैं, इसका अर्थ यह नहीं है कि जब हम उन्हीं मानसिक-भावनात्मक परिस्थितियों में नहीं होते तो भजन हमसे बात नहीं करता। तो पहला यह है, भावात्मक भ्रांति हमें यह मानने या स्वीकार करने के लिए प्रेरित कर सकती है कि पवित्रशास्त्र उन मूल परिस्थितियों से परे बात नहीं करता। दूसरा बड़ा जोखिम यह है कि हम मानसिक-भावनात्मक स्थिति को अपनी मानसिक-भावनात्मक स्थिति के साथ गलत रीति से जोड़ लेते हैं, जैसे कि हम लेख में दी गई जिन बातों को पढ़ते हैं या उन बातों को पढ़ने में असफल होते हैं जिससे हम लेख पर वास्तव में अपनी व्यक्तिगत स्थिति को थोप देते हैं। और यह इन दिनों में एक बहुत ही सामान्य बात है क्योंकि, लेख और लेखक और पाठकों के संदर्भ में, हमारे समय में लेख को "पाठक-केंद्रित" रूप में पढ़ने का बोलबाला है। हमें लेखक को लेखक के इरादों के अनुसार बात करने देना चाहिए, और हमें लेख के शब्दों के साथ-साथ पाठक की स्थिति को भी अर्थ की समझ में आने देना चाहिए।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

परंतु साथ ही, पुराने नियम की पुस्तकों के पाठकों पर विचार करने से भी हम कई लाभ प्राप्त कर सकते हैं। हम बहुत सी उपयोगी जानकारी से अवगत हैं। हम अक्सर उनके सामान्य स्थान को जानते हैं। और हम अक्सर उनके द्वारा अनुभव की गई कुछ प्रमुख घटनाओं से अवगत होते हैं। हम यह भी जानते हैं

कि, जैसा अधिकांश लोगों के समूहों के साथ होता है, कुछ लोग परमेश्वर के समक्ष अपनी वाचाई जिम्मेदारियों के प्रति विश्वासयोग्य थे और अन्य अविश्वासयोग्य थे।

इस प्रकाश में, आइए विचार करें कि हम राजाओं और इतिहास की पुस्तकों के मूल पाठकों के बारे में क्या जानते हैं। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि राजाओं की पुस्तक के पाठक अब भी निर्वासन में थे। राजाओं की पुस्तक में दिए गए बल से कम से कम कुछ मूल पाठकों को इस बात से आश्वस्त होने की जरूरत थी कि परमेश्वर अपने लोगों को निर्वासन में भेजने में न्यायी था। और हम जानते हैं कि कुछ पाठकों को यह समझने की जरूरत थी कि इस्राएल को प्रतिज्ञा देश में लौटने से पहले मन फिराने की जरूरत थी।

इसके विपरीत, इतिहास की पुस्तक के लेखक ने उन पाठकों के लिए लिखा जो प्रतिज्ञा के देश में लौट आए थे। एज्रा, नहेम्याह और हाग्गै की पुस्तकें यह स्पष्ट करती हैं कि लौटनेवालों में से बहुत से लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने में विफल रहे थे। और इसके फलस्वरूप, उन्हें इस्राएल में परमेश्वर के राज्य के पुनर्निर्माण के प्रति अपने समर्पण को बढ़ाने की जरूरत थी। राजाओं और इतिहास की पुस्तकों के मूल पाठकों के बारे में इन तथ्यों को जानने भर से हमें इन पुस्तकों के साहित्यिक चित्रण के बारे में बहुत कुछ समझने में सहायता मिलती है।

> परमेश्वर ने स्वयं को मूल पाठकों के समक्ष, एक विशेष स्थान के लोगों पर, एक विशेष समय में प्रकट किया। यह बाइबल के बारे में एक महत्वपूर्ण बात है। यह केवल ऊपर से दिए गए निर्देशों का संग्रह नहीं है। परमेश्वर एक विशेष परिदृश्य में विशेष लोगों से बात कर रहा था, और इसलिए जब हम जान लेते हैं कि जो वे परमेश्वर से सुन रहे थे, और जो वे परमेश्वर से प्राप्त कर रहे थे, उसे उन्होंने कैसे समझा, तो यह हमें इस बात को जानने में सहायता करता है कि हमारी अपनी समझ की सीमाएँ क्या हैं। यदि मैं बाइबल को मूल पाठकों द्वारा समझी गई बात से बहुत अलग तरीके से समझ रहा हूँ, तो कुछ न कुछ गड़बड़ है। निश्चित रूप से, मेरे अपने संदर्भ के कारण कुछ अंतर आएगा, लेकिन मेरे अपने संदर्भ को उनके संदर्भ के प्रकाश में समझा जाना चाहिए, और तब मुझे पता चलेगा कि व्याख्या की संभावित सीमाएँ क्या हो सकती हैं।
>
> — डॉ. जॉन ऑस्वाल्ट

अब जब हमने यह देख लिया है कि साहित्यिक विश्लेषण किस प्रकार लेखक और मूल पाठकों पर ध्यान केंद्रित करता है, तो हमें पुराने नियम के साहित्यिक विश्लेषण के तीसरे और प्राथमिक केंद्र की ओर मुड़ना चाहिए — स्वयं अभिलेख।

अभिलेख

पवित्रशास्त्र के अभिलेख साहित्यिक विश्लेषण के प्राथमिक केंद्र हैं क्योंकि वे परमेश्वर का पूर्ण-आधिकारिक वचन हैं। इसलिए हमें अभिलेख पर ध्यान केंद्रित करने के खतरों और लाभों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

एक ओर, केवल अभिलेख पर ध्यान देने में खतरा है। दुखद रूप से, हाल के दशकों में, कई व्याख्याकारों ने आग्रह किया है कि हमें व्याख्या के लिए केवल पवित्रशास्त्र के लेखों की ही जरूरत होती है। जब हम लेखक और पाठकों पर विचार करते हैं तो हमारे सामने आनेवाली अनिश्चितताओं से बचने के प्रयास में, इन विद्वानों ने तर्क दिया है कि हमें लेखक और पाठकों पर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए। वास्तव में, अनुसरण करने के लिए यह कोई अच्छा निर्देश नहीं है। एक ही अभिलेख, चाहे वह बाइबल का हो या नहीं, का अर्थ इस आधार पर बहुत अलग-अलग हो सकता है कि इसे किसने लिखा है और यह किसके लिए लिखा गया है। जब व्याख्याकार केवल अभिलेख पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करते

हैं और लेखक तथा मूल पाठकों को नजरअंदाज कर देते हैं, तो वे उस स्थिति में आ जाते हैं जिसे हम "लिखित भ्रांति" कह सकते हैं, जिसका अर्थ है केवल अभिलेख पर बहुत अधिक निर्भर होना।

> लेखों को पढ़ने में एक भ्रांति पाई जाती है, उदाहरण के लिए, पुराने नियम के लेखों को, जिसे "लिखित भ्रांति" कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि हमें अर्थ के लिए केवल शब्दों की जरूरत होती है और केवल शब्दों में संपूर्ण अर्थ पाया जाता है। अब, यह सुनने में अच्छा लगता है, विशेषकर तब जब आप पवित्रशास्त्र के बारे में ऊँचा दृष्टिकोण रखते हैं और आप मानते हैं कि ये शब्द प्रेरणा-प्राप्त हैं। लेकिन यह क्या करता है, यह लेखक और पाठक को बाहर कर देता है। और लेखों का अर्थ, जो लेख के शब्दों के भीतर पाया जाता है, उन लोगों के प्रति लेखक के उद्देश्यों से भी बना है जिनके लिए यह लिखा गया है... अतः लिखित भ्रांति में लेखक और मूल पाठक बाहर छूट जाते हैं, लेकिन वे तो मूलभूत तत्व हैं। हम लेखक और पाठक के बारे में हमेशा उतना नहीं जानते जितना हम जानना चाहते हैं, लेकिन पवित्रशास्त्र की पर्याप्तता हमें बताती है कि परमेश्वर हमें लेखों की निष्पक्षता और विश्वासयोग्यता से व्याख्या करने के लिए पर्याप्त जानकारी देता है, और उसी आधार पर लेखक, लेख और पाठक वे हैं जिनमें अर्थ पाया जाता है।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

दूसरी ओर, अभिलेख के बारे में हम जितना जान सकते हैं उसे जानने से कई लाभ जुड़े हुए हैं शब्दावली, व्याकरण, भाषा के अलंकार, वाक्य संरचना, रूपरेखा, साहित्यिक संदर्भ, शैली इत्यादि, सब पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ और आधुनिक अनुप्रयोगों को खोजने में बहुत योगदान देते हैं। इसलिए किसी अनुच्छेद के इन पहलुओं के बारे में जितना संभव हो सके उतना समझना पवित्रशास्त्र की सही व्याख्या करने के लिए महत्वपूर्ण है। जिन अभिलेखों का हम अध्ययन कर रहे हैं उनकी विशिष्ट विशेषताओं पर गहरा ध्यान दिए बिना हम पवित्रशास्त्र की जिम्मेदारीपूर्ण व्याख्या नहीं कर सकते।

लेकिन हमें सबसे अधिक लाभ तब मिलता है जब हम प्रत्येक अनुच्छेद को लेखक और मूल पाठकों के प्रकाश में देखते हैं। लेखक और पाठकों के संदर्भ में पुराने नियम के लेखों को ध्यान से देखने के लाभों को स्पष्ट करने के लिए, हम 2 इतिहास 33:1-20 में पाए जानेवाले मनश्शे के शासनकाल को संक्षेप में देखेंगे। जब हम इस अनुच्छेद का अध्ययन करते हैं, तो हमारे पास 2 राजाओं 21:1-18 में मनश्शे के शासनकाल का एक समानांतर विवरण प्राप्त करने का बड़ा लाभ है। जब इतिहास के लेखक ने अपने विवरण को तैयार किया, तो उसने 2 राजाओं 21 में से कुछ हिस्सों की नकल की, उन्हें बदला, हटाया और कुछ बातों को ऐसे रूपों में जोड़ा जो उसके पाठकों के प्रति उसके उद्देश्यों के अनुरूप थे। आइए पहले 2 राजाओं 21 में विवरण को देखें कि यह कैसे सच है।

दूसरा राजाओं 21 पाँच सममित भागों में विभाजित है : पहला, पद 1 — मनश्शे के शासन का आरंभ; दूसरा, पद 2-9 — मनश्शे का मूर्तिपूजा का पाप; तीसरा, पद 10-15 — मनश्शे को प्राप्त भविष्यवाणिय निंदा; चौथा, पद 16 — मनश्शे के हिंसा के और अधिक पाप; और पाँचवाँ, पद 17,18 — मनश्शे के शासन का अंत।

जैसे कि इस रूपरेखा से पता चलता है, 2 राजाओं 21 में मनश्शे को शुरू से अंत तक एक दुष्ट के रूप में दर्शाया गया है। उसका परिचय एक बड़े पापी के रूप में किया गया है। कहानी का दूसरा भाग विस्तार से बताता है कि कैसे उसने मूर्तियों के द्वारा मंदिर को अपवित्र किया और लोगों को कनानियों से भी अधिक बुराई करने के लिए प्रेरित किया। इस विवरण का तीसरा भाग भविष्यवक्ताओं द्वारा मनश्शे की निंदा है। इस भविष्यवाणी के अनुसार, मनश्शे के पापों के फलस्वरूप यरूशलेम का विनाश और उसके लोगों का निर्वासन हुआ। विवरण का चौथा भाग यह भी कहता है कि मनश्शे ने यरूशलेम की सड़कों को

निर्दोष लोगों के खून से भर दिया था। फिर अंतिम भाग बताता है कि मनश्शे की मृत्यु हो गई और उसे गाड़ा गया।

संपूर्ण 2 राजाओं 21 में मनश्शे के शासनकाल की एक भी सकारात्मक विशेषता नहीं पाई जाती। लेकिन अब, आइए 2 राजाओं 21 में पाए जानेवाले मनश्शे के शासनकाल के विवरण की तुलना 2 इतिहास 33 में उसके शासनकाल के समानांतर विवरण से करें। इतिहासकार ने 2 राजाओं 21 का खंडन नहीं किया, लेकिन अपने मूल पाठकों के प्रति उसके उद्देश्यों ने उसे एक बहुत ही अलग विवरण देने के लिए प्रेरित किया। 2 इतिहास 33:1-20 भी पाँच मुख्य भागों में विभाजित है। पहला, पद 1 मनश्शे के शासनकाल के आरंभ का परिचय देता है, जो मोटे तौर पर सीधे 2 राजाओं से लिया गया है। दूसरा, पद 2-9 में मनश्शे की मूर्तिपूजा का वर्णन 2 राजाओं 21:1-9 से केवल थोड़े से अंतर के साथ किया गया है।

यहाँ तक, इतिहासकार का विवरण 2 राजाओं से काफी मिलता जुलता है। दोनों विवरणों में, मनश्शे को एक भयानक पापी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेकिन 2 इतिहास 33 का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ खंड 2 राजाओं से नाटकीय रूप से भिन्न है। तीसरा खंड भविष्यवक्ताओं की इस घोषणा को पूरी तरह से छोड़ देता है कि यरूशलेम के निवासियों को मनश्शे के पापों के कारण निर्वासन में भेजा जाएगा। इसके बजाय, पद 10-13 में इतिहासकार ने वर्णन किया कि कैसे मनश्शे को व्यक्तिगत रूप से बेबीलोन में निर्वासन में भेज दिया गया। और इससे भी अधिक, उसने बताया कि मनश्शे ने निर्वासन के दौरान अपने पापों से पश्चाताप किया और परमेश्वर से क्षमा प्राप्त की। फिर, चौथे खंड में, 2 राजाओं में बताई गई मनश्शे की हिंसा का उल्लेख करने के बजाय, इतिहासकार ने पद 14-17 में बताया कि मनश्शे यरूशलेम लौट आया, उसने नगर का पुनर्निर्माण किया, और मंदिर में परमेश्वर की उचित आराधना को पुनर्स्थापित किया। और अंत में, 2 इतिहास 33:18-20 में, मनश्शे के शासनकाल का समापन मनश्शे की पश्चाताप की प्रार्थना के एक और उल्लेख को शामिल करने के द्वारा 2 राजाओं में दिए उसके विवरण से आगे बढ़ता है। हमें मनश्शे के जीवन के 2 राजाओं में दिए गए विवरण और 2 इतिहास में दिए गए विवरण के बीच इन अंतरों को कैसे समझाना चाहिए? ये विवरण इतने भिन्न क्यों हैं?

संक्षेप में, इन भिन्नताओं को इस तथ्य से समझाया जा सकता है कि राजाओं और इतिहास की पुस्तकों की रचना अलग-अलग लेखकों द्वारा और अलग-अलग पाठकों के लिए की गई थी। प्रत्येक लेखक ने अपने पाठकों के जीवन को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करने के लिए अपने विवरण को तैयार किया। राजाओं के लेखक ने मनश्शे के शासनकाल का विस्तृत, वस्तुनिष्ठ विवरण प्रदान करने के लिए नहीं लिखा। बल्कि, उसने अपनी पुस्तक के एक मुख्य उद्देश्य को समझाने के लिए मनश्शे के भयानक पापों के बारे में लिखा : परमेश्वर मनश्शे के कारण यरूशलेम को दंड देने और उसके लोगों को बंधुआई में भेजने में धर्मी था।

लेकिन जैसा कि हमने देखा, इतिहासकार की स्थिति बहुत अलग थी। उसने निर्वासन के बाद संघर्ष कर रहे पुनर्स्थापित समुदाय को परमेश्वर की विश्वासयोग्य सेवा में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करने हेतु अपना इतिहास लिखा। इस कारण, इतिहासकार ने मनश्शे के बारे में सच्ची बातों को हटाया और जोड़ा भी जो उसके उद्देश्यों के अनुरूप थीं। वह मनश्शे के जीवन के उन विवरणों को प्रकाश में लाया जो उसके अपने इस्राएली पाठकों के जीवन के विवरणों के समान थे। मनश्शे ने भयंकर पाप किया था, और उन्होंने भी वैसा ही किया था। मनश्शे को बेबीलोन में निर्वासन में भेज दिया गया था, और उन्हें भी। मनश्शे ने मन फिराया और उसे क्षमा कर दिया गया, और उनके साथ भी ऐसा ही हुआ। और शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब मनश्शे प्रतिज्ञा के देश में लौट आया, तो उसने यरूशलेम नगर का पुनर्निर्माण किया और उचित आराधना को पुनर्स्थापित किया। और यही वह चुनौती थी जिसका इतिहासकार के पाठकों ने अपने समय में सामना किया था। इतिहासकार का मुख्य बिंदु यह था : यदि जिस राजा के कारण यहूदा को निर्वासन में जाना पड़ा था, उसने देश में लौटने पर राज्य का पुनर्निर्माण किया और उसे बहाल किया, तो निश्चित रूप से इतिहासकार के अपने पाठकों को भी ऐसा ही करना चाहिए।

मनश्शे के शासनकाल के विवरणों के बीच यह तुलना दर्शाती है कि पुराने नियम की पुस्तकों को तस्वीरों या साहित्यिक चित्रों के रूप में देखना इतना महत्वपूर्ण क्यों है। जब हमारी रुचि के विषय और सच्चे ऐतिहासिक विवरण पुराने नियम में पाए जाते हैं, तो हमें इस तथ्य के प्रति भी सचेत रहना चाहिए : पुराने नियम के लेखकों ने अपनी पुस्तकों की विषय-वस्तु और संरचना को उन विशेष तरीकों पर बल देने के लिए तैयार किया था जिनके अनुसार उनके मूल पाठकों को जीवन जीना था। इस प्रकार का साहित्यिक दृष्टिकोण आज हमारे लिए पुराने नियम के पवित्रशास्त्र में कई गहन विचारों को खोलता है।

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने देखा है कि पुराने नियम के कैनन ने परमेश्वर के लोगों की जरूरतों को संबोधित किया, ऐसा उसने परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बारे में उनके विश्वास को उन स्थितियों पर लागू करने के द्वारा किया जिनका उन्होंने सामना किया था। पुराने नियम की पुस्तकों ने कई तरीकों से ऐसा किया। जब हम पुराने नियम के कैनन को एक दर्पण के रूप में देखते हैं, तो हम देखते हैं कि कैसे ये पुस्तकें ऐसे अनगिनत विषयों के बारे में बात करती हैं जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। जब हम कैनन को एक खिड़की के रूप में देखते हैं, तो हम देखते हैं कि कैसे वह इतिहास के प्रति सच्चे दृष्टिकोण प्रदान करता है। और जब हम पुराने नियम के कैनन को साहित्यिक तस्वीरों या चित्रों के संग्रह के रूप में देखते हैं, तो हम इन सभी विषयों और ऐतिहासिक घटनाओं पर कुछ दृष्टिकोणों को पहचानते हैं।

मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों के रूप में, हमें सीखना चाहिए कि पुराने नियम की पुस्तकों को ऐसे दर्पणों के रूप में कैसे देखा जाए जो हमारी रुचियों और जरूरतों को संबोधित करते हैं, खिड़कियों के रूप में कैसे देखा जाए जो इतिहास में परमेश्वर के सामर्थी कार्यों को प्रकट करती हैं, और साहित्यिक तस्वीरों के रूप में कैसे देखा जाए जो सेवा के ऐसे विशेष मार्गों पर बल देती हैं जिसका परमेश्वर के लोगों को अनुसरण करना चाहिए। पुराने नियम के कैनन की पुस्तकें सबसे पहले ऐसे कई अलग-अलग लोगों के लिए लिखी गई थीं, जिन्होंने प्राचीन संसार में विभिन्न अवसरों और चुनौतियों का सामना किया था। और जब आज हम अपने जीवन में ऐसे ही अवसरों और चुनौतियों का सामना करते हैं, तो पुराने नियम की पुस्तकें हमें यह भी सिखाती हैं कि कैसे हमें परमेश्वर की वाचाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहना है ताकि हम मसीह के महिमा में पुनरागमन तक पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ा सकें।

चलचित्र, अध्याय मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ - Thirdmill at thirdmill.org.